ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

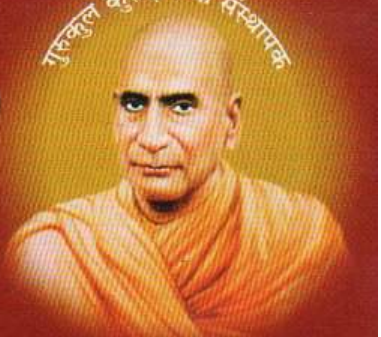

पौष वि. स. 2079 ● कलियुगाब्द 5122 ● वर्ष : 09 ● अंक : 12 ● दिसम्बर 2022

आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्विरोध प्रधान निर्वाचित हुए राधाकृष्ण आर्य

गुजरात के राज्यपाल एवं गुरुकुल के संरक्षक आचार्य श्री देवव्रत जी ने दी शुभकामनाएं

स्वामित्व : AN ISO 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

No. 1 Residential School Of Haryana By Education World

गुरुकुल में हुए जोरदार स्वागत पर प्रधान राजकुमार गर्ग का आभार व्यक्त करते हुए राधाकृष्ण आर्य जी

समाजसेवा को समर्पित श्रद्धेय आचार्य देवव्रत जी की विभिन्न गतिविधियाँ

वडोदरा में भारत की पहली ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट उत्पादन सुविधा के शिलान्यास पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के साथ राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा, कच्छ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में स्नातक छात्रों को पदवी प्रदान करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत रोगियों को सहायता निक्षय मित्र के लिए आरोग्य कर्मियों को सम्मानित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्राकृतिक कृषि में पी.एचडी में प्रवेश प्राप्त छात्रों को पंजीकरण पत्र प्रदान करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'फ्रीडम मोटो राइड' बाइक रैली को राजभवन से झंडी देकर रवाना करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

सूरत में श्री तलाजा-महुआ लेउआ पटेल समाज द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में नवदंपत्तियों को आशीर्वाद देते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

सम्पादक परिवार

संरक्षक : आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल, गुजरात)
मुख्य संपादक : राजकुमार गर्ग
मार्गदर्शक : राधाकृष्ण आर्य
प्रबंध-संपादक : सूबे प्रताप
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश जी
राजीव कुमार
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार
वितरण व्यवस्थापक: जयपाल आर्य
: राजीव कुमार
: अशोक कुमार

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

-संपादक

अनुक्रमणिका

क्र. विवरण	पृ.सं.
1. सम्पादकीय : वृक्षारोपण को बनाएं जीवन का अंग... राजकुमार गर्ग	02
2. सभा का निर्विरोध प्रधान बन राधाकृष्ण आर्य ने रचा इतिहास	03
3. एनडीए में गुरुकुल के अभयनूर की 58वीं रैंक	05
4. मनोविज्ञान की अनोखी दुनिया... आचार्य सत्यप्रकाश जी	06
5. प्राकृतिक खेती: रासायनिक व जैविक खेती का प्रबल विकल्प	07
6. परस्पर संबंध हैं सुख का आधार...महाशय जयपाल आर्य	09
7. शिवो वै आचार्य: ...आचार्य दयाशंकर जी	10
8. 35 टुकड़ों वाला प्यार ... जसविन्द्र आर्य	11
9 प्राकृतिक चिकित्सा से चमकाएं सौंदर्य... डॉ. देव आनन्द	13
10. भोजन के लिए किस धातु के हों बर्तन... राजेश कुमार	14
11. देववाणी संस्कृत भाषा पर करें गर्व... शिवम् शास्त्री	15
12. सभा की कार्यकारिणी में युवाओं को मिली अहम जिम्मेदारी	16
13. वैदिक संस्कृति और गो संवर्धन जीवन में ... प्रदीप दलाल	17
14. वैदिक काल की कुछ प्रसिद्ध विदूषियां... रवि शास्त्री	18
15. सूर्य सिद्धान्त देने वाले महान् वैज्ञानिक 'वराह मिहिर'...शुभम् शास्त्री	19
16. वैदिक संस्कृति की रक्षा में गुरुकुलों की भूमिका...मनमोहन आर्य	20
17. सीमित हो टैक्नोलॉजी का इस्तेमाल... रमन कुमार	22
18. देशी घी नहीं बटर ऑयल खा रहे हैं आप... पवन कुमार	23
19. गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

संपादकीय

वृक्षारोपण को बनाएं जीवन का अंग

राजकुमार गर्ग

पेड़-पौधे हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। ईश्वर व प्रकृति ने एक वरदान के रूप में हमें पेड़-पौधों को प्रदान किया है मगर आज हम अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर की उपेक्षा कर रहे है, न केवल उपेक्षा कर रहे हैं बल्कि अपने छोटे से लाभ के लिए प्रकृति के विरुद्ध जाकर पेड़-पौधों को काटकर भारी विनाश कर रहे हैं। प्रत्येक पेड़ में कोई न कोई औषधीय गुण अवश्य छिपा हुआ है। ऐसे में पेड़-पौधे हमारे लिए उपयोगी ही नहीं अपितु प्रकृति की अमूल्य भेंट हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पेड़ हमारे मित्र हैं। पेड़ों से हमें न केवल जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्राप्त होती है बल्कि ईधन व इमारती लड़की भी प्राप्त होती है। कई पेड़-पौधों से हमें पशुओं के लिए चारा भी मिलता है। इतना ही नहीं कई पेड़-पौधों के पत्ते, छाल, जड़ इत्यादि का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है। हमारे जीवन के लिए इतने उपयोगी होने के बाजवूद भी हम पेड़-पौधों के महत्त्व को नहीं समझ पा रहे और अंधाधुंध कटाई कर प्रकृति और वातावरण को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं।

प्राचीनकाल से ही हमारे पूर्वज पीपल के पेड़ की परिक्रमा करते रहे हैं। इससे कोई चमत्कार या कोई उपचार आदि नहीं होता बल्कि इसके पीछे वैज्ञानिक कारण यह है कि पीपल का वृक्ष वातावरण में फैली कार्बन डाइऑक्साइड लेता है और ऑक्सीजन छोड़ता है। ऑक्सीजन का हमारे शरीर, हमारे जीवन के लिए क्या महत्त्व है, यह सभी को ज्ञात है। ऑक्सीजन के बिना हम सांस भी नहीं ले सकते, ऑक्सीजन के बिना हम कुछ मिनट ही जिन्दा रह सकते हैं, ऑक्सीजन के बिना हमारी मृत्यु निश्चित है। इतनी महत्त्वपूर्ण ऑक्सीजन पीपल के वृक्ष से सबसे ज्यादा मात्रा में उत्सर्जित होती है, पीपल का वृक्ष सबसे ज्यादा ऑक्सीजन छोड़ता है, इसीलिए इसकी परिक्रमा आदि करने से कई रोग ठीक होने का दावा किया जाता है। हालांकि रोग ठीक होते है या नहीं ये अलग विषय है मगर प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन मिलने से और सैर (परिक्रमा) से हमारा शरीर स्वस्थ अवश्य रहता है।

दुःख की बात है कि प्रतिवर्ष सरकार व समाजसेवी संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रमों के तहत लाखों की संख्या में पेड़ लगाये जाते हैं। वृक्षारोपण कार्यक्रमों पर अरबों की राशि खर्च होती है मगर उसके बावजूद पेड़ों का संरक्षण नहीं हो रहा है। कुछ संस्थाएं और समाजसेवी तो वर्षभर वृक्षारोपण का यह पुनीत कार्य करते हैं। जन्मदिवस, विवाह-समारोह, जन्मोत्सव, विवाह-वर्षगांठ इत्यादि कोई भी शुभ अवसर हो, वृक्षारोपण करते व करवाते हैं जिससे हमारा प्राकृतिक सन्तुलन बना रहे, वातावरण शुद्ध हो। सरकार द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए तो जाते हैं मगर कुछ ही दिनों बाद ऐसे कार्यक्रमों में लगाये गये वृक्ष उपेक्षा के कारण सूखने लगते हैं और फिर अनदेखी की भेंट चढ़ जाते हैं। ऐसे वृक्षारोपण कार्यक्रमों का कोई लाभ नहीं है, लगाये गये पौधों का संरक्षण भी होना चाहिए।

दिल्ली जैसे महानगरों का तापमान और वातावरण पेड़-पौधों के अभाव के कारण ही प्रदूषित है। पेड़-पौधों की कमी के कारण ही ऐसे बड़े शहरों का तापमान गाँवों, देहात की अपेक्षा हमेशा ज्यादा पाया जाता है और वहाँ प्रदूषण भी अधिक होता है। इसका कारण यह है कि गाँव, देहात में एक तो पेड़-पौधे अधिक पाये जाते हैं, दूसरा वहाँ पर वाहन बहुत कम होते है जिससे वायु प्रदूषण की संभावना बहुत कम होती है। प्रदूषण के कारण आज शहरों में नई-नई बीमारियाँ आ गई है, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को प्रदूषण से होने वाली अनेक बीमारियों ने अपनी गिरफ्त में ले रखा है।

पेड़ हमारे लिए प्रकृति का वरदान हैं, हमें इनकी उपयोगिता और महत्त्व समझना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाये जिससे प्राकृतिक सन्तुलन बना रहे। यदि प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक पेड़ लगाने का संकल्प ले और जीवन पर्यन्त उसका संरक्षण करे तो प्रति वर्ष लाखों की संख्या में पेड़ लगाये जा सकते हैं और वातावरण हरा-भरा तथा पूर्णरूप से शुद्ध हो सकता है। सड़कों के दोनों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देगी। गांव, शहर, महानगर जहाँ भी खाली स्थान हो, वहाँ पेड़ लगायें और वातावरण को शुद्ध करने में अपना सहयोग दें।

पेड़ लगाना और उसका संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। यह किसी एक व्यक्ति या संस्था या सरकार द्वारा किया जाने वाला कार्य नहीं है, इसमें सभी का पूरा सहयोग होना चाहिए। यह ऐसा कार्य है जिसकी जिम्मेवारी सभी को लेनी होगी, ऐसा नहीं है कि हम सोचें यह हमारा कार्य नहीं है, हम क्यों पेड़ लगायें? वातावरण को शुद्ध व स्वच्छ रखने का काम तो प्रशासन व सरकार का है, यह सोच गलत है। वातावरण को शुद्ध रखना, अपने आसपास साफ-सफाई रखना, पेड़ लगाना और उसका संरक्षण करना यह हम सभी की जिम्मेवारी है और हमें इसे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाना चाहिए। अंत में मैं बस इतना ही कहूँगा **'पेड़-पौधे प्रकृति के वरदान हैं, इनका संरक्षण करें।'**

- राजकुमार गर्ग

आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्विरोध प्रधान बन राधाकृष्ण आर्य ने रचा इतिहास

नवनिर्वाचित प्रधान ने राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का लिया आशीर्वाद, गुरुकुल पहुंचने पर हुआ भव्य स्वागत

राजीव कुमार द्वारा

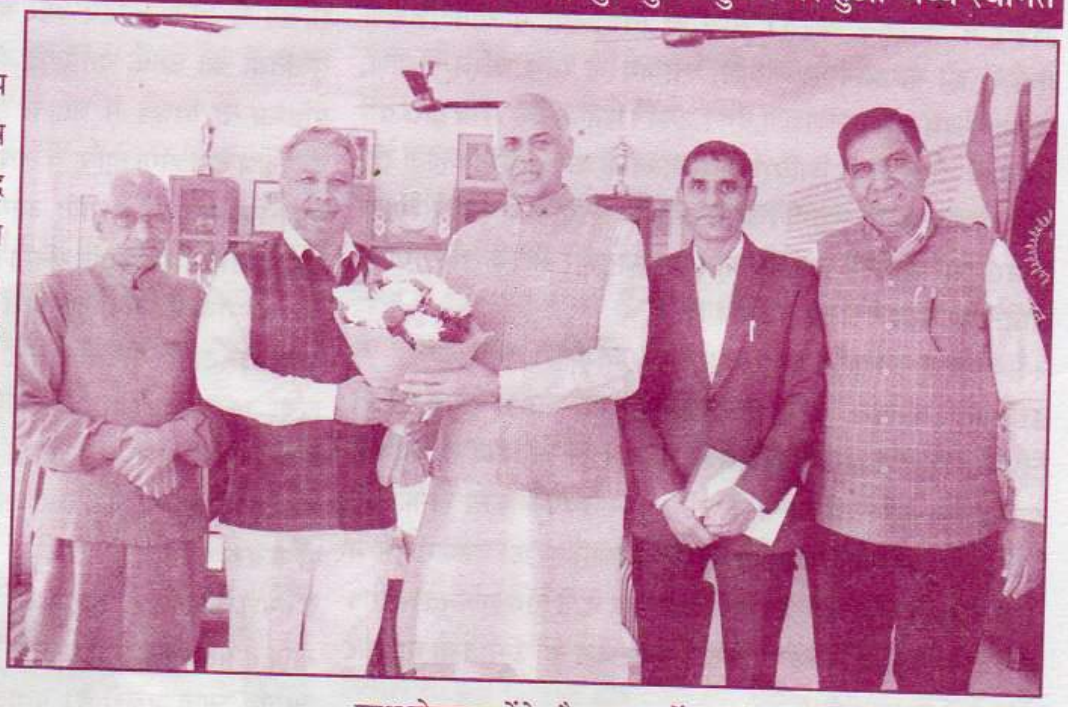

कुरुक्षेत्रः आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के त्रिवार्षिक चुनाव में इस बार कैथल के प्रसिद्ध समाजसेवी राधाकृष्ण आर्य ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। विशुद्ध आर्य समाजी परिवार में जन्मे, साफ-स्वच्छ छवि, मिलनसार और मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी राधाकृष्ण आर्य को निर्विरोध सभा का प्रधान चुना गया है। सभा के नवनिर्वाचित प्रधान राधाकृष्ण आर्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुंचे जहां पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने उन्हें ऐतिहासिक जीत पर बधाई और शुभकामनाएं दीं। वहीं गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, उप प्रधान मा0 सतपाल काम्बोज, निदेशक कर्नल अरुण दत्ता, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, मुख्य लेखा अधिकारी सतपाल सिंह, लेखा अधिकारी अनिल कुमार, दिलबाग सिंह, महक सिंह, प्रवीण कुमार, अशोक कुमार आदि ने पुष्प-मालाओं से उनका भव्य स्वागत किया। गुरुकुल वेद प्रचार विभाग के वरिष्ठ भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य, प्रचारक मनीराम आर्य ने भी नवनिर्वाचित सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य को बधाई दी।

राधाकृष्ण आर्य ने महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी सहित गुरुकुल परिवार का आभार जताया। उन्होंने कहा कि सभा के प्रधान के रूप में उन्हें जो बड़ी जिम्मेदारी आर्य समाज के लोगों ने सौंपी हैं उसे वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाएंगे साथ ही आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के अमर संदेश को जन-जन तक पहुंचाने और आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयास करेंगे। उन्होंने चुनाव में सहयोग करने वाले सभी आर्यजनों का भी आभार जताया। साथ ही कहा कि चुनाव प्रक्रिया एक आम बात है, इसमें जीत-हार निश्चित है। उनका किसी से कोई द्वेष नहीं है, सभा और आर्य समाज के उत्थान हेतु वे सभी को साथ लेकर चलेंगे और समाज में जाग्रति लाएंगे।

बता दें कि सभा के इतिहास में 30 वर्ष बाद स्वामी ओमानन्द जी के पश्चात् ऐसा पहली बार हुआ है कि प्रधान पद के साथ-साथ उप प्रधान, मंत्री, उप मंत्री और कोषाध्यक्ष भी निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। इसके अलावा अंतरंग सदस्यों के लिए कोई वोटिंग नहीं हुई क्योंकि अंतरंग सदस्यों को भी बिना किसी विरोध के चुना गया है। सभा के चुनाव हेतु 25 नवम्बर को नामांकन दाखिल करना था जिसमें राधाकृष्ण आर्य ने प्रधान पद के लिए, देशबन्धु मदान ने उप प्रधान, उम्मेद शर्मा ने मंत्री, अनुराग आर्य ने उपमंत्री, सुमित्रा आर्या ने कोषाध्यक्ष तथा सतीश बंसल ने पुस्तकालय अध्यक्ष पद के लिए नामांकन भरा। इसी क्रम में अंतरंग कार्यकारिणी के सदस्यों हेतु राममेहर आर्य, जितेन्द्र कादियान, बलवान आर्य, देवदत्त आर्य, नायब सिंह, विजयपाल, रमेश आर्य, विरेन्द्र आर्य, रघुबीर आर्य, डॉ0 राजिन्द्र विद्यालंकार, जगदीश आर्य, शिवकुमार आर्य, आचार्य ऋषिपाल, जयदेव आर्य और जगदेव आर्य नामांकन भरा। इन सभी पदों पर कोई दूसरा नामांकन न आने की सूरत में उक्त सभी को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया है जो सभा के चुनाव इतिहास में एक रिकार्ड है। '**गुरुकुल-दर्शन**' से बातचीत में राधाकृष्ण आर्य ने भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की। जो इस प्रकार है :-

आर्य समाज और वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाएंगे : राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि सभा द्वारा वेद प्रचार के कार्य को

विस्तार रूप दिया जाएगा। इसके लिए अधिक से अधिक भजन टोलियों और योग शिक्षकों की नियुक्तियां की जाएंगी। जो प्रचार रथ में गांव-गांव जाकर लोगों को दैनिक यज्ञ, आर्य समाज और वेदों के विषय में जागरूक करेंगे। साथ ही विद्यालयों में योग शिक्षक युवाओं को योगासन, प्राणायाम, व्यायाम के साथ चरित्र निर्माण, शक्ति संचय आदि प्रशिक्षण देंगे। उन्होंने बताया कि सभा द्वारा वर्ष भर आर्य वीर दल के शिविरों और शाखाओं का आयोजन होता रहे, ऐसी योजना बनाई जाएगी जिसमें अधिक से अधिक युवा प्रशिक्षण लेकर दूसरे युवाओं को भी आर्य समाज और वैदिक संस्कृति से जोड़ने का भरसक प्रयास करेंगे।

वैदिक संस्कृति से युवाओं को जोड़ेंगे : आर्य समाज के प्रचारक गांव-गांव, स्कूल-कॉलेजों में 'आर्य वीर योग एवं जीवन निर्माण' शिविर लगाएंगे जिसके माध्यम से अधिक से अधिक युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य होगा। इन शिविरों में ऐसे युवा तैयार होंगे जो वैदिक साहित्य को पढ़कर समाज में फैली बुराइयों को दूर करने में आर्य समाज के हाथ मजबूत करेंगे। साथ ही भविष्य में अच्छे नागरिक बनकर देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने में सक्षम होंगे।

गो सेवा और गो संरक्षण को लेकर चलाएंगे अभियान : राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि देश व प्रदेश सरकार के प्रयासों के बावजूद में गो माता की दशा दयनीय बनी हुई है। आर्य प्रतिनिधि सभा सड़कों पर बेसहारा और असहाय घूमने वाली गायों के पुनर्वास हेतु उचित कदम उठाएगीं। ऐसी गायों को किसान अपने घरों में रखकर प्राकृतिक खेती भी कर सकते है। इस विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा किसानों को जागरूक करेंगी।

पर्यावरण शुद्धि महाभियान : उन्होंने कहा कि आज सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण में फैल रहा प्रदूषण है जिसे दैनिक यज्ञ और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके दूर किया जा सकता है। इसके लिए सभा द्वारा महाअभियान चलाया जाएगा जिसके तहत लोगों को ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने और दैनिक यज्ञ करने के लिए जागरूक करेंगे। उन्होंने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है और इससे पर्यावरण शुद्ध होता है। लोगों को अपने जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, शादी-समारोह व अन्य विशेष दिवसों पर यज्ञ और पौधारोपण अवश्य करना चाहिए जिससे पर्यावरण शुद्ध हो। साथ ही हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि प्रदूषण को न बढ़ाएं।

युवतियों हेतु विशेष शिविरों का आयोजन : राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि पिछले कुछ समय से समाज में लव-जिहाद के मामलों में काफी वृद्धि देखने को मिली है। इससे न केवल लव-जिहाद का शिकार हुई युवती प्रताड़ित होती है बल्कि उसके परिवार को भी समाज में भारी अपमान झेलना पड़ता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए हिन्दू परिवार की युवतियों को आर्य समाज के सत्संग में जाना चाहिए और वैदिक साहित्य को पढ़ना चाहिए। युवतियों को उनके दायित्वों और कर्त्तव्यों के साथ परिवार की प्रतिष्ठा के विषय में बताना होगा, साथ ही उन्हें आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देना होगा ताकि वे लव-जिहाद का शिकार न बने। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी यदि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाएगी तभी संस्कारवान् बनेगी।

समाज में फैली बुराइयों को करेंगे दूर : राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा पूरे प्रदेश में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी और अंधविश्वास जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए भरसक प्रयास करेगी। इसके लिए आर्य भजनोपदेश गांव-गांव जाकर लोगों को जागरूक करेंगे। उन्हें वैदिक संस्कृति से रूबरू कराएंगे। नशा आज की युवा पीढ़ी को खोखला कर रहा है। नशे की लत के कारण कई घर बरबाद हो गये है, इस पर अंकुश लगाना बेहद जरूरी है। इसके लिए कानून के साथ-साथ समाज में जाग्रति आना जरूरी है। युवाओं को अपने भले-बुरे का जब तक ज्ञान नहीं होगा, समाज से बुराइयां समाप्त नहीं होगी। ऐसा ही प्रयास कन्या भ्रूण हत्या को लेकर किया जाना चाहिए। जब तक मां-बहनें लड़का और लड़की में भेद करना नहीं छोड़ेगी तब तक समाज से यह बुराई दूर नहीं होगी।

सभा के अधूरे कार्यों को पूरा करेंगे : नवनिर्वाचित प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि वे एक सभा के अधूरे कार्य को पूरा करने का प्रयास करेंगे। इसके लिए उनकी पूरी टीम दृढ़ संकल्प है। हरियाणा में जहां-जहां भी सभा की प्रोपर्टी है, अगर उन पर अवैध कब्जा है तो उसे कब्जामुक्त करवाया जाएगा। सभा द्वारा संचालित विभिन्न स्कूल, कॉलेजों में और अधिक सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएगी। वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु नई पुस्तकों और साहित्य का क्रय किया जाएगा।

बहरहाल, आर्य समाज की भट्टी से कुन्दन बनकर निकले और अब सभा प्रधान की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को संभालने वाले राधा ष्ण आर्य जी के नेतृत्व में प्रदेश में आर्य समाज के कार्यों में नई गति आएगी और उनकी पूरी टीम समाज में एक नई जाग्रति लाने का कार्य करेगी, 'गुरुकुल-दर्शन' परिवार भी ऐसी कामना करता है। गुरुकुल-दर्शन परिवार की ओर से भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की समस्त कार्यकारिणी को निर्विरोध चुने जाने पर बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

एनडीए में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अभयनूर की 58वीं रैंक

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्र अभयनूर ने यूपीएससी की एनडीए की फाइनल लिस्ट में आल इंडिया में 58वीं रैंक प्राप्त किया है जो गुरुकुल के लिए ही अपितु पूरे हरियाणा के लिए गर्व की बात है। अभयनूर के साथ ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 4 अन्य छात्रों ने भी एनडीए की फाइनल लिस्ट में अच्छी रैंक हासिल की है और अब जल्द ही गुरुकुल के ये ब्रह्मचारी पुणे स्थित एनडीए में ट्रेनिंग के लिए जाएंगे। इस बड़ी कामयाबी पर गुरुकुल प्रबंधक समिति के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक कर्नल अरुण दत्ता, प्राचार्य सूबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य ने सभी छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। वहीं गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने भी गुरुकुल परिवार को बधाई दी है। निदेशक कर्नल दत्ता ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने एनडीए में कामयाबी के नई कीर्तिमान गढ़े हैं। गुरुकुल के छात्रों में मौजूद राष्ट्रप्रेम और देश सेवा का जज्जा उन्हें एनडीए में सफल बनाने में एक सीढ़ी का कार्य कर रहा है वहीं सही समय पर गुरुकुल के अध्यापकों द्वारा मिले मार्गदर्शन से उनकी कामयाबी निश्चित हो रही है। प्रतिवर्ष एनडीए में जाने वाले गुरुकुल के छात्रों का आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। इसी कड़ी में अब गुरुकुल के अभयनूर सहित शक्ति सिंह, रोहित, अमन नांदल और हर्ष दहिया ने वीरवार को जारी एनडीए की फाइनल लिस्ट में स्थान बनाते हुए सेना में उच्च अधिकारी बनने का सपना साकार किया है। कर्नल दत्ता ने कहा कि छात्रों की कामयाबी के पीछे उनकी कठोर परिश्रम के साथ-साथ गुरुकुल के अध्यापकों की मेहनत और एनडीए इंस्ट्रेक्टर सूबेदार एस. के. मोहन्ती व सूबेदार बलवान सिंह का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भारत को जानो प्रतियोगिता में गुरुकुल के छात्र रहे अव्वल

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-भारत विकास परिषद् हरियाणा उत्तर की प्रान्त स्तरीय 'भारत को जानो' प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वरिष्ठ वर्ग के छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय की उपलब्धि रूपी माला में एक और मोती जोड़ने का कार्य किया है जिसे लेकर गुरुकुल में हर्षोल्लास का माहौल है। गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने गुरुकुल प्रबंधक समिति के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक कर्नल अरुण दत्ता, प्राचार्य सुबेप्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य सहित प्रतियोगिता में छात्रों का मार्गदर्शन करने वाले विज्ञान अध्यापक सुशील कुमार को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। निदेशक कर्नल दत्ता ने बताया कि भारत विकास परिषद् हरियाणा उत्तर द्वारा इस प्रतियोगिता का आयोजन मारकण्डा नेशनल कॉलेज, शाहाबाद में 13 नवम्बर 2022, रविवार को किया गया जिसमें उत्तरी हरियाणा के अम्बाला, पंचकूला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल और कैथल जिलों से 24 विद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में अपनी उत्कृष्ट मेधा का परिचय देते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्र चिराग और दिव्यांश आर्य की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आयोजकों की ओर से विजेता छात्रों को प्रमाण-पत्र और ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। गत सायं गुरुकुल में पहुंचने पर छात्रों का जोरदार अभिनन्दन किया गया।

प्रधान राजकुमार गर्ग ने अध्यापक सुशील कुमार व छात्रों को आगामी प्रतियोगिता में भी उम्दा प्रदर्शन करने का आशीर्वाद दिया। निदेशक कर्नल दत्ता ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम के साथ-साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारी कुशल और दक्ष अध्यापकों के मार्गदर्शन में करवायी जाती है जिससे गुरुकुल के छात्र जहां भी जाते हैं, वहां गुरुकुल का परचम लहराते हैं। गुरुकुल प्रबंधक समिति द्वारा छात्रों को सभी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है ताकि छात्रों का चहुमुखी विकास हो और वे जीवन में अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

आचार्य सत्यप्रकाश जी

मनोविज्ञान की अनोखी दुनिया

जिस प्रकार से देश को चलाने के लिए सरकार में अनेक विभाग होते हैं। जैसे जल आपूर्ति विभाग, सड़क निर्माण विभाग, स्वास्थ्य विभाग इत्यादि। इसी प्रकार से एक विभाग होता है जिसका नाम है-मौसम विभाग। इस विभाग के वैज्ञानिक लोग हर समय यही जानकारी करते रहते है कि हवाएं किस दिशा से चल रही हैं, किस दिशा में जा रही हैं, उनकी गति क्या है, बादलों की स्थिति क्या है, वर्षा कब होगी, कहां होगी, कितनी होगी, कैसी होगी इत्यादि। इस प्रकार से मौसम की जानकारी करना इस विभाग का मुख्य कार्य है, और उसकी सूचनाएं समय-समय पर वे जनता को देते रहते हैं।

मौसम तो हवाओं और बादलों की स्थिति पर आधारित है। इनका पता लगाना सरल है कि हवाएं किस दिशा से चल रही हैं, वे बादलों को कहां ले जाएंगी, कब वर्षा आएगी इत्यादि। परन्तु जो मनुष्य नामक प्राणी है उसमें एक 'चेतन आत्मा' है। उसके अपने सैंकड़ों पूर्व जन्मों के संस्कार हैं। न जाने कैसे-कैसे संस्कार हैं, अच्छे भी, बुरे भी। समय-समय पर अलग-अलग लोगों के साथ मनुष्य को व्यवहार करना पड़ता है। कभी अच्छे लोग सामने आते हैं, कभी बुरे लोग सामने आते हैं। किसी के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार होता है, किसी के साथ दुर्व्यवहार भी होता है। उन परिस्थितियों और घटनाओं/दुर्घटनाओं से मनुष्य के विचार, संस्कार बदलते रहते हैं। इसलिए मनुष्य का विचार और व्यवहार कब बदल जाएगा, यह कहना बहुत ही कठिन है।

इस विभाग में भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक होते हैं, जिन्हें मनोवैज्ञानिक नाम से कहा जाता है। वे आत्मा के विचारों संस्कारों का अध्ययन करते हैं। वास्तव में यह विज्ञान 'आत्मा' से सम्बन्ध है। आत्मा अकेला, बिना मन इंद्रियों आदि की सहायता के कुछ कार्य नहीं कर पाता, इसलिए उसे सब कार्य करने के लिए मन आदि की सहायता लेनी पड़ती है क्योंकि वे सब कार्य मन के माध्यम से होते हैं, इसलिए इस 'आत्मा के विज्ञान' को 'मनोविज्ञान' के नाम से भी कह दिया जाता है। समाज में तो यही नाम अधिक प्रचलित है, 'मनोविज्ञान'।

चलिए, कोई बात नहीं। जो नाम प्रचलित है, हम भी उसी नाम से बात कर लेंगे। मनोविज्ञान के जो वैज्ञानिक हैं, वे आत्मा के विचारों, संस्कारों का खूब गहन अध्ययन करते हैं। वे काफी कुछ पता भी लगा लेते हैं कि किन परिस्थितियों में व्यक्ति किस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है और वे इस विषय में बहुत सा पूर्वानुमान भी लगा लेते हैं परंतु आत्मा और मन का यह विज्ञान बहुत विस्तृत और गंभीर है। इसे पूरा-पूरा और ठीक-ठीक जानना मनुष्यों के बस की बात नहीं है इसलिए बड़े-बड़े मनोवैज्ञानिक भी किसी एक मनुष्य की भी ठीक-ठीक भविष्यवाणी नहीं कर सकते कि यह मनुष्य कब कहां कैसे और कितना बदल जाएगा। किस दिशा में कब कौन कितना मुड़ जाएगा कुछ नहीं कहा जा सकता।

फिर भी व्यवहार तो इन्हीं मनुष्यों के साथ ही करना पड़ता है। तो अधिक से अधिक इतना ही कर सकते हैं कि इस आत्मविज्ञान या मनोविज्ञान का अध्ययन करें। वैदिक दर्शन शास्त्रों को पढ़ें। उनमें मनोविज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें बताई गई हैं। इन बातों को जान कर व्यवहार में लोगों का परीक्षण करें और लोगों की स्थितियों का अध्ययन करें। उनकी स्थिति के अनुसार उनके साथ व्यवहार करें।

आत्मा पशु पक्षियों आदि अन्य प्राणियों में भी होती है। उनके साथ भी मनोविज्ञान के अनुसार ही व्यवहार करें। आत्मा चाहे पशु पक्षी के शरीर में हो, चाहे मनुष्य के, कोई भी दु:ख और अपमान नहीं चाहता। इस मनोविज्ञान को समझते हुए ही मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सब प्राणियों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। यही वेदों में बताया गया धर्म है।

जब आप मनोविज्ञान का अध्ययन करके, उसके अनुसार मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी प्राणियों के साथ उचित व्यवहार करेंगे, तो उससे यह लाभ होगा, कि आप भी बहुत कुछ जानने लग जाएंगे कि कब, कौन व्यक्ति या पशु-पक्षी आदि प्राणी कहां कैसी प्रतिक्रिया करेगा। यदि ऐसा जानकर उसके साथ अच्छा और उचित व्यवहार किया जाए कि जिससे वह ज्यादा क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान आदि दोषों में न फंसे, तो वह आपकी हानि या तो नहीं करेगा या बहुत कम करेगा अर्थात् जो व्यक्ति मनोविज्ञान को नहीं जानता और उसके अनुसार वह दूसरों के साथ व्यवहार नहीं करता, वह दूसरों के साथ उल्टा-सीधा व्यवहार करेगा और निश्चित रूप से दु:ख भोगेगा। यह स्थिति आज अमूमन पूरे विश्व में देखने को मिल रही है।

इस कारण से इस मनोविज्ञान का अध्ययन करना अनिवार्य है। इसके बिना दूसरों से होने वाली हानियों से बचना असंभव है क्योंकि आत्मा में अल्पज्ञता, स्वार्थ, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दोष होने से, वह कभी न कभी, कहीं न कहीं, आपकी हानि अवश्य करेगा। चाहे मनुष्य हों या पशु-पक्षी, सबके साथ मनोविज्ञान के अनुसार ही व्यवहार करें। तभी आप सुख से जी पाएंगे। पूरा सुख तो केवल मोक्ष में ही मिलेगा।

-आचार्य सत्यप्रकाश जी
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्राकृतिक खेती : रासायनिक व जैविक खेती का प्रबल विकल्प

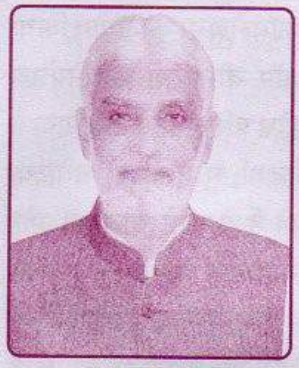

डॉ0 हरिओम

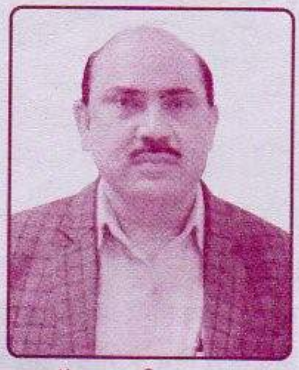

डॉ0 बलजीत सहारण

प्राकृतिक खेती का अर्थ है सूक्ष्म जीवाणुओं की खेती। खेती के इस सिस्टम में भूमि को एक जीवित अस्तित्व मानकर वे सभी सस्य क्रियाएं की जाती हैं जिससे भूमि के अंदर जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है। सूक्ष्म जीवाणु और केंचुए अनंत काल से एक-दूसरे के सहकर्मी रहे हैं। जब एक की संख्या बढ़ती है तो दूसरे की संख्या में भी स्वत: ही वृद्धि हो जाती है और जब दोनों की संख्या बढ़ती है तो भूमि के स्वास्थ्य में तुरंत बदलाव आने लगता है।

जब हम प्राकृतिक खेती की बात करते हैं तो कुछ प्रश्न खेती से संबंधित लोगों के मन में उठने लगते हैं। प्राकृतिक खेती क्या है? क्या प्राकृतिक और जैविक खेती एक ही हैं? क्या प्राकृतिक खेती में भी जैविक खेती की तरह आरंभ के वर्षों में उपज में कमी आती है? यदि उपज में कमी आती है तो क्या देश की खाद्य सुरक्षा को खतरा हो सकता है? कीट व बीमारियों का नियंत्रण रासायनिक दवाओं के बिना कैसे संभव होगा, इत्यादि प्रश्न पूछे जाते हैं।

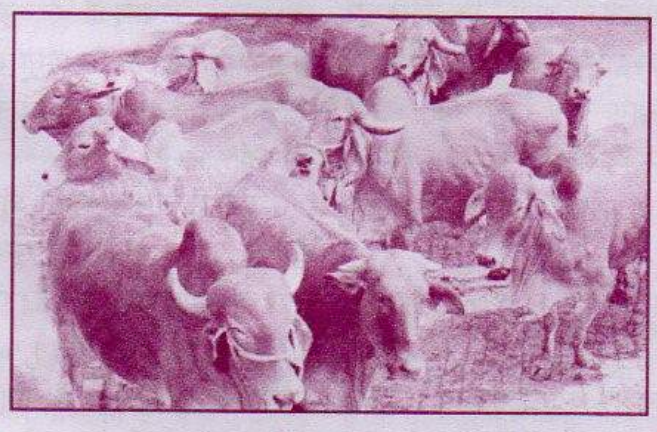

रासायनिक खेती से हमारे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण हो रहा है। फसल पर खर्चा बढ़ने के साथ उपज में ठहराव आ गया है। ग्लोबल वार्मिंग और वायुमंडल में संभावित बदलाव चिंता के विषय हो गए हैं। भूमि, पशु, पक्षी, पौधे और मनुष्य का स्वास्थ्य लगातार प्रभावित हो रहा है इसलिए रासायनिक खेती का विकल्प ढूंढना अति आवश्यक हो गया है।

प्राकृतिक खेती में जैविक खेती की तरह जैविक कार्बन खेत की ताकत का इंडिकेटर नहीं है बल्कि केंचुए की मात्रा तथा जीवाणुओं की मात्रा व गुणवत्ता खेत की ताकत के द्योतक हैं। खेत में जब जैविक पदार्थ विघटित होता है और जीवाणु व केंचुए बढ़ते हैं तो खेत का जैविक कार्बन स्वत: ही बढ़ जाता है।

जीवाणुओं का शरीर प्रोटीन मास होता है और जब जीवाणुओं की मृत्यु होती है तो यह प्रोटीन मास जड़ों के पास हयूमस के रूप में जमा होकर पौधे का हर प्रकार से पोषण करने में सहायक होता है। दूसरे लाभदायक जीवाणु जो रासायनिक खाद व दवाओं के कारण भूमि में नहीं पनप पाते हैं, प्राकृतिक खेती से वे जीवाणु भी बढ़ जाते हैं जिसके फलस्वरूप भूमि व पौधों की कीट, बीमारियों, नमक, सूखा, मौसम आदि विषमताओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है जिससे पौधे की बढ़वार और पैदावार भी बढ़ती है। देश में 86 फीसदी किसान छोटे और सीमांत हैं। जैविक खेती में आरंभ के वर्षों में उपज में जो कमी आती है उसे वे सहन नहीं कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त जैविक खाद व जैविक दवाओं की कीमत रासायनिक इनपुट्स से भी अधिक है जिससे जैविक खेती में छोटे किसानों का शोषण होता है। जैविक और प्राकृतिक खेती में एक मूलभूत अंतर है। रासायनिक व जैविक खेती में फसल की जरूरत के हिसाब से पोषक तत्त्वों की पूर्ति के लिए खाद की मात्रा तय की जाती है लेकिन प्राकृतिक खेती में किसी भी खाद का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि जीवामृत व घनजीवामृत के माध्यम से जीवाणुओं का कल्चर डाला जाता है।

यह जीवामृत जब सिंचाई के साथ खेत में दिया जाता है तो इसमें विद्यमान जीवाणु भूमि में जाकर मल्टीप्लाई करने लगते हैं और इनमें ऐसे अनेक जीवाणु होते हैं जो वायुमंडल में मौजूद 78 प्रतिशत नाइट्रोजन को पौधे की जड़ों व भूमि में स्थिर कर देते हैं। दूसरे पोषक तत्त्वों की उपलब्धि बढ़ाने में जीवाणुओं के साथ केंचुआ भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है जो भूमि की निचली सतहों से पोषक तत्त्व लेकर पौधे की जड़ों को उपलब्ध करवाता है।

प्राकृतिक खेती में एक देशी गाय से 30 एकड़ तक की खेती

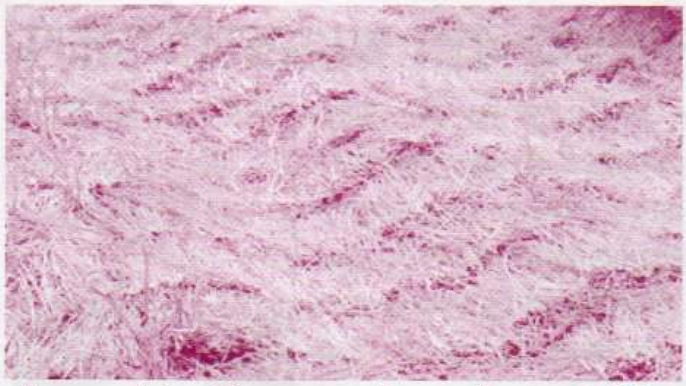

की जा सकती है क्योंकि 1 एकड़ की खुराक तैयार करने के लिए गाय के 1 दिन के गोबर और गोमूत्र की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त डेढ़ किलो बेसन, डेढ़ किलो गुड़ और 50 ग्राम मिट्टी (जिसमें कभी कोई रासायनिक खाद व दवा का प्रयोग न किया हो) बैक्टीरिया कल्चर के लिए चाहिए। एक प्लास्टिक के 200 लीटर के ड्रम में इन्हें डाल कर उसे पानी से भर दिया जाता है। यह खुराक गर्मियों में 3-4 दिन में और सर्दियों में 6-7 दिन में तैयार हो जाती है। प्राकृतिक खेती में बाजार से कुछ भी खरीदने की जरूरत नहीं है, जबकि जैविक खेती एक महंगी पद्धति है।

प्राकृतिक खेती में यदि जीवामृत व घनजीवामृत के अतिरिक्त कुछ सस्य क्रियाओं को अपनाया जाए तो पहले ही वर्ष उपज में कमी नहीं आती है। फिर भी किसानों को सलाह दी जाती है कि पहले वर्ष केवल आधा या 1 एकड़ में प्राकृतिक खेती करें और अनुभव होने के बाद ही इसके अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाया जाए ताकि यदि किसी कारणवश उपज में कमी आए तो इससे किसान की आमदनी कम से कम प्रभावित हो और देश की खाद्य सुरक्षा किसी भी हालत में प्रभावित न हो।

प्राकृतिक खेती में जीवाणु और केंचुए की संख्या बढ़ाने के लिए कुछ सस्य क्रियाएं जैसे खेत की कम से कम जुताई, जीवाणुओं के फूड सोर्स के तौर पर फसल अवशेष व हरी खाद का प्रयोग, मल्चिंग, वापसा, जैव विविधता और ड्रिप सिंचाई के द्वारा जीवामृत का प्रयोग खेत में जीवाणुओं की वृद्धि करने में सहायक होते हैं।

प्राकृतिक खेती में अब तक के किसानों के अनुभव से स्पष्ट है कि इस पद्धति में कीड़े और बीमारियों का प्रकोप बहुत ही कम होता है और यदि फसल पर प्राकृतिक बायोफॉर्मूलेशन्स का प्रयोग किया जाए तो फसल पर आने वाले कीट और बीमारियों का नियंत्रण प्रभावी तरीके से किया जा सकता है। शोध परिणामों में पाया गया है कि जो बैक्टीरिया व फंगस जैसे ट्राइकोडर्मा, सुडोमोनास, बवेरिया आदि जो पौधे के लिए लाभदायक होते हैं वे सभी जीवामृत और घनजीवामृत में मौजूद रहते हैं। मायकोराइजा फंगस केंचुए की कास्ट में भरपूर मात्रा में मौजूद रहती है। ये सभी जीवाणु और केंचुए भूमि व पौधों में कीट व बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक खेती में रासायनिक व जैविक खेती की तरह ग्लोबल वार्मिंग पैदा करने वाली गैसों का उत्सर्जन होने की संभावना भी बहुत कम है क्योंकि ऑर्गेनिक मैटर जो खेत में डाले जाते हैं उन में पाए जाने वाले तत्त्व जीवाणु और केंचुए का भोजन होते हैं जिससे यह जीवाणु खेत में डाले गए कार्बनिक पदार्थों का सीक्वेस्ट्रेशन करने में सहायक होते हैं जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग पैदा करने वाली गैसों का उत्सर्जन होने की बहुत ही कम संभावना होती है। इसके अतिरिक्त खेत में जैविक कार्बन और लाभदायक जीवाणुओं के बढ़ने से भूमि व पौधों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है और पौधा कीट, बीमारियों तथा ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाली वायुमंडल की विषमताओं को सहन करने के योग्य हो जाता है।

खेत में जैविक कार्बन और भूमि के भौतिक स्वास्थ्य में सुधार होने के कारण फसल पर सूखा पड़ने व वायुमंडल का तापमान बढ़ने का प्रभाव कम होता है। इसके साथ-साथ भूमि की लंबे समय तक पानी को धारण करने की क्षमता बढ़ जाती है। केंचुए की क्रियाशीलता से भूमि में वायु का संचार बढ़ता है और अधिक बारिश होने पर भी खेत पानी को तुरंत सोख लेता है जिससे मौसम की विषम परिस्थितियों में भी फसल को कम से कम नुकसान होता है अतः स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है की प्राकृतिक खेती रासायनिक और जैविक खेती का एक प्रबल विकल्प है।

डॉ. हरिओम, स्टेट ट्रेनिंग एडवाइजर एवं
सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
डा. बलजीत सहारण, वरिष्ठ वैज्ञानिक माइक्रोबायोलॉजी,
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

परस्पर संबंध है सुख का आधार

जयपाल आर्य

संसार में मनुष्यों को रोटी, कपड़ा, मकान, मोटर-गाड़ी, धन, संपत्ति आदि जड़ पदार्थों से अनेक प्रकार का सुख मिलता है। यह बात ठीक है परन्तु उससे भी अधिक सुख आपसी संबंधों के कारण से मिलता है। माता-पिता का बच्चों के साथ, बच्चों का माता-पिता के साथ, भाई-बहन, पति-पत्नी, चाचा-चाची, मामा-मामी, बुआ-फूफा, मौसी-मौसा इत्यादि जो परस्पर संबंध होते हैं, और कुछ मित्र भी होते हैं। संसार में जो भी संबंध होते हैं, उनके कारण बहुत-सा सुख मिलता है।

धन आदि जड़ वस्तुओं से अलग प्रकार का सुख मिलता है। संबंधियों से अलग प्रकार का सुख मिलता है। दोनों की तुलना करें, तो धन आदि जड़ वस्तुओं से सामान्य और कम सुख मिलता है, जबकि चेतनों से उसकी तुलना में बहुत अच्छा और अधिक सुख मिलता है। हमें और आपको दोनों प्रकार का सुख चाहिए। दोनों का अपना-अपना मूल्य है परन्तु आज का व्यक्ति अविद्या के कारण धन आदि जड़ वस्तुओं के सुख को बड़ा सुख मानने लगा है और जो सुख संबंधों के कारण मिलता है, उसको छोटा मानने लगा है। इस मिथ्या ज्ञान का परिणाम यह हुआ कि लोग आजकल धन आदि जड़ वस्तुओं को बचाने लगे हैं और संबंधों को तोड़ने लग गए हैं।

प्राय: प्रत्येक व्यक्ति में इतना मिथ्या अभिमान भरा हुआ है कि वह स्वयं को सबसे अधिक बुद्धिमान और विद्वान् समझता है तथा दूसरों को मूर्ख समझता है। इसी कारण से अपवाद स्वरूप एक-आध व्यक्ति को छोड़कर प्राय: कोई भी व्यक्ति अपना दोष या अपनी आलोचना सुनना नहीं चाहता। क्यों ? क्योंकि ऐसा सुनना उसे अपमानजनक लगता है, कष्टदायक लगता है और यह बात सभी जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति कष्ट भोगना नहीं चाहता। इसलिए जब भी कोई व्यक्ति किसी के दोष बताता है, अथवा उसकी आलोचना करता है, तो उसे सुनकर वह व्यक्ति क्रोधित हो जाता है, दु:खी हो जाता है, नाराज हो जाता है। ऐसा करना उचित नहीं है। यदि वह कुछ गंभीरता से विचार करे, तो यह उसके लिए हानिकारक नहीं है बल्कि लाभदायक है।

वेदों का यह सिद्धांत है कि यदि आपके अंदर दोष रहेंगे, तो वे आपको भी दु:ख देंगे तथा समाज को भी। यदि आपके अंदर अच्छे गुण होंगे, तो वे आपको भी सुख देंगे और समाज को भी। इसलिए जहां तक संभव हो, अपने दोषों को जानना, समझना और उन्हें दूर करना, आपके लिए हितकारक है।

आप अपने दोषों को कब जान पाएंगे ? या तो आप स्वयं अपने अंदर अपने दोषों की खोज करें। अथवा कोई दूसरा व्यक्ति आपके दोषों को देखकर जानकर समझकर फिर आपको बताए, और आप उसकी बात प्रेम से सुनें तब आपको पता चल सकता है कि आपमें क्या-क्या और कितने दोष हैं ?

उसके बाद यदि आप अपने दोषों पर निष्पक्ष भाव से विचार चिंतन करें और आपको आपके दोष समझ में आ जाएं कि हां, मुझ में ये ये दोष हैं। और आप उन्हें दूर करने की इच्छा रखते हों। फिर इस काम में आप पूरा पुरुषार्थ करें, तब तो आपके दोष दूर हो सकते हैं। तभी आपका दु:ख भी कम होगा।

यदि आप दूसरे व्यक्ति के द्वारा बताए गए दोषों को ध्यानपूर्वक सुनना ही नहीं चाहते, उन पर विचार करना ही नहीं चाहते, उन्हें दूर करने का पुरुषार्थ भी करना नहीं चाहते, तब तो आपके दोष दूर नहीं हो सकते और न ही आपके दु:ख दूर हो सकते। इसलिए अच्छा यही है कि जब कोई आलोचक व्यक्ति आपके दोष बताए तो प्रेमपूर्वक उसकी बात को सुनें। उस पर शान्ति से विचार करें। यदि आपके अंदर वे दोष सिद्ध हो जावें, तो उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें। यदि उसका आरोप झूठा हो और वे दोष आपमें हों ही नहीं तब भी कोई चिंता की बात नहीं है। दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जब दोष हैं ही नहीं, तो दु:खी क्यों होना ?

बुद्धिमत्ता इसी बात में है कि धन आदि जड़ वस्तुओं से कम सुख मिलता है और माता-पिता-मित्र आदि चेतन वस्तुओं से अधिक ऐसा सोचना चाहिए। दोनों की तुलना में चेतन मनुष्यों के संबंध को प्राथमिकता देनी चाहिए। यदि कहीं धन छोड़ना भी पड़े, तो भले ही छोड़ दें, परन्तु संबंध को बचा लेना चाहिए।

संबंधों को बचाना और उनको जीवन भर बनाए रखना, इसी में सुख, शांति, आनंद और बुद्धिमत्ता है परन्तु ये सारे संबंध जीवन भर तभी बने रहेंगे, यदि आप सभ्यता की शर्तों और नियमों का पालन करेंगे। जैसे ही आप सभ्यता की शर्तों और नियमों को भंग करेंगे, वैसे ही संबंध कमजोर होना आरंभ हो जाएंगे और यदि वही प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती रही, तो संबंध धीरे-धीरे कमजोर होते जाएंगे तथा एक दिन टूट जाएंगे, इसलिए संबंधों को टूटने से बचाएं। पूरी शक्ति लगाकर सभ्यता की शर्तों और नियमों का पालन करें व अपने जीवन को सफल और सुखी बनाएं। **-जयपाल आर्य**

वरिष्ठ भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

शिवो वै आचार्यः

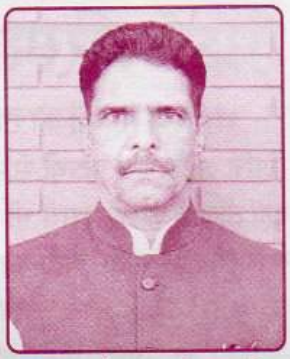

आचार्य दयाशंकर जी

भारतीय वैदिक तथा लौकिक संस्कृत साहित्य के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ की गई है जिसका दुष्परिणाम बहुत विकृत रूप में देखने को मिल रहा है। हमारे वैदिक मौलिक ग्रन्थों को मूलभूत सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से दूर अवैदिक वेद-विरूद्ध तथा विपरीत मार्ग की ओर ले जाकर वैदिक कर्मकाण्ड तथा धार्मिक मान्यताओं की धज्जियां ही उड़ा डाली। वेदों की मूल संहिताओं के अतिरिक्त शायद ही कोई ऐसा ग्रन्थ बचा हो जो मौलिक तथ्यों के विपरीत अर्थों से अछूता रहा हो। चाहे वह वाल्मीकि रामायण हो अथवा व्यासकृत महाभारत। सभी ग्रन्थ प्रक्षिप्तता के शिकार हुए हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं-व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच सहस्र छह सौ श्लोक युक्त अर्थात् सब दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण 'भारत' बनाया था वह महाराजा विक्रमादित्य के समय बीस सहस्र। महाराज भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय पच्चीस और तीस सहस्र श्लोक युक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि हमारे धार्मिक ग्रन्थों के साथ बहुत अभद्र खिलवाड़ किया गया है। इसका दुष्परिणाम का फल आज समस्त विश्व तथा विशेष रूप से भारतवर्ष अनेक प्रकार के पाखण्ड, पाषाण-पूजा, टोटके, जातिवाद, छुआछूत, मत-मतान्तरवाद, गुरूड़मवाद आदि-आदि। इसके अतिरिक्त यज्ञादि कर्मकाण्डों में नाना विधाएं जो प्रतीक तथा अलंकारिक रूप में कराई जाती है। उन प्रतिकात्मक विधाओं को न समझकर विपरीत अर्थ कर लेना, ऐसे ही शिव, गणेश आदि के चित्रों में निर्मित अलंकारों तथा प्रतीकों की वास्तविकता से विपरीत अनर्थ रूप में मानना और पूजा करना आदि। इस लेख में चित्रों में वर्णित प्रतीकों के विषय में कुछ चर्चा करेंगे।

आपने शिव की प्रतिमा को अवश्य देखा होगा। उसमें कुछ ऐसा चित्रित किया है जो सामान्यतः किसी भी महापुरुष के साथ मेल नहीं खाता। जैसे मस्तिष्क से गंगा का निकलना, बालों के स्थान पर लंबी-लंबी जटाएं, जटाओं के बीच दूज का चन्द्रमा, तीन आंखे, गले में सर्फ, बैल की सवारी, पत्नी पार्वती (हिमालय) पर्वत की पुत्री, त्रिशूल, डमरू आदि-आदि।

थोड़ा तो मस्तिष्क पर जोर दो, क्या ये सब सम्भव है? इस पृथ्वी से चन्द्रमा थोड़ा ही छोटा है तो क्या चन्द्रमा सिर के छोटे से भाग में आ सकता है? कुछ तो बुद्धि का उपयोग हमें करना चाहिए, इतना बड़ा चन्द्रमा, गंगा का इतना अथाह जल क्या मस्तिष्क में समा सकता है? नहीं, इसे थोड़ा समझें और इन सभी प्रतीकों को जानकर अनर्थ से अर्थ की ओर विचार करें। ये सभी चिह्न वास्तव में प्रतीक हैं। प्रतीक प्रायः किसी अन्य तथ्य की ओर संकेत मात्र होते हैं। इसको आप कुछ ऐसे समझें।

आप अपने आवास से रेलवे स्टेशन जाना चाहते हैं। मार्ग का पता नहीं। किसी भद्रपुरुष ने आपको स्टेशन की दिशा में चला तो दिया किन्तु वह आपके साथ-साथ नहीं चल सकता। आप चलते जा रहे हैं कि सामने एक चौराहा आ गया, वहां भी कोई मार्ग बताने वाला नहीं है। आपने देखा कि चारों मार्गों पर एक-एक पत्थर की शिलाएं गड़ी हैं। प्रत्येक शिला पर कुछ लिखा है, उन लिखे हुए शब्दों के नीचे तीर का निशान बना हुआ है। उनमें एक शिला पर लिखा है 'रेलवे स्टेशन'। इसके ठीक नीचे वही तीर का चित्र भी अंकित है जो एक तरफ अपनी फाल किये हुए है।

बुद्धिमान लोग संकेत समझ लेते हैं और उधर को चल पड़ते हैं जिधर तीर का फाल इशारा कर रहा है। अब विचार कीजिए, वह पत्थर की शिला बोल नहीं सकती, चुपचाप खड़ी है तो बुद्धिमान व्यक्ति उस तीर के फाल से सुगमता से समझ जाता है कि स्टेशन इधर है और अपने लक्ष्य पर पहुंच जाता है किन्तु मूर्ख और अज्ञानी उस पत्थर शिला पर रेलवे स्टेशन पढ़कर नीचे प्रतीक सांकेतिक चिह्न तीर के इशारे न समझते हुए, यही स्टेशन है ऐसा मानकर रेल की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं। वहां पर उन्हें रेल की प्रतीक्षा में सम्पूर्ण जीवन बीत जाता है मगर रेल नहीं मिलती, मिले भी कैसे, वह स्टेशन थोड़े ही है।

नीचे वाला तीर का निशान जो संकेत कर रहा है, उससे वह अनभिज्ञ है और इसी अज्ञानता से अंधे हुए कुछ लोग यज्ञादि कर्मकाण्डों की विधाओं तथा अलंकारिक प्रतीकात्मक चित्रों के संदर्भ में कर रहे हैं। ऐसे लोगों को जीवन पर्यन्त कुछ फल नहीं मिलता, उल्टा वे अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को बर्बाद कर रहे हैं। आज उसी शिव के विषय में कुछ चर्चा करेंगे और वास्तव में इन चिन्हों के पीछे क्या तथ्य छिपा है, यह बताने का प्रयास करेंगे। विज्ञ लोग समझ जाएंगे कि प्रतीकों तथा विधाओं के पीछे क्या रहस्य छिपा है, क्योंकि गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है-**'परोक्षप्रिया इव वै देवाः प्रत्यक्षे द्विषः'** अर्थात् देव लोग (विद्वान) क्रियाकलाप के पीछे जो परोक्ष छिपा होता है उसके उपासक होते हैं, स्थूल दृष्टि से दृश्यमान कर्मकाण्ड के नहीं। (क्रमशः)

-दयाशंकर शास्त्री
संस्कृत विभागाध्यक्ष, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

लव-जिहाद का भयानक अंजाम

35 टुकड़ों वाला प्यार

जसविन्द्र आर्य

श्रद्धा वाकर और आफताब वाले प्रकरण को भी हम और आप थोड़े दिन में भूल जायेंगे। सवाल यह है कि इन सब की जड़ क्या है? थोड़ा इस बारे में भी अभिभावकों को चिन्तन करने की जरूरत है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य किसी की भावनाओं को आहत करने या किसी को नीचा दिखाना नहीं है बल्कि लव जिहाद के चक्कर में अपने मां-बाप और परिवार की प्रतिष्ठा को तार-तार कर अपने सपनों की दुनिया सजाने वाली लड़कियों को सच्चाई से रूबरू कराना है, साथ ही कुछ संदेश अभिभावकों के लिए भी है।

1.अधिकारो की बात करना, जिम्मेदारी से मुह मोड़ना: श्रद्धा को यह मालूम था कि वह 25 वर्ष की हो गयी है और अपना निर्णय स्वयं लेना उसका अधिकार है लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि 25 वर्ष के युवा की जिम्मेदारी क्या होती है? यह बात आजकल के सारे युवाओं पर लगती है। बचपन से उनको अधिकार की शिक्षा दी जाती है और जिम्मेदारी से बचाया जाता है। वास्तव में बच्चा छोटी-छोटी जिम्मेदारी उठायेगा तभी तो वह लायक बनेगा। बचपन में उसे जिम्मेदारी नहीं दी जाती क्योंकि वह छोटा है। किशोरावस्था में उसे जिम्मेदारी नहीं दी जाती क्योंकि वह पढ़ाई कर रहा है। युवावस्था में जिम्मेदारी नहीं दी जाती क्योंकि वह सेटल नहीं हुआ है। विवाह के बाद जिम्मेदारी नहीं दी जाती क्योंकि अभी दोनों को घुमना-फिरना है। 30-35 वर्ष के युवा को भी जिम्मेदारी से बचाने वाले मां-बाप यहां है। इस स्थिति में आप कैसे अपेक्षा रखते हैं कि वह जिम्मेदारी वहन करेगा? बच्चा जब छोटा होता है तभी उसे छोटी-छोटी जिम्मेदारी देंगे, तो बड़ा होकर वह बड़ी जिम्मेदारी उठाने के लायक बनेगा। इस सत्य को हम शायद भूल चूके हैं।

2.आत्मनिर्भरता का गलत अर्थ: वर्तमान में केवल पैसे कमाना ही आत्मनिर्भरता माना जाता है। मां-बाप भी बच्चों का लालन-पालन इसी लक्ष्य से करते हैं कि हमारा बच्चा ज्यादा से ज्यादा पैसे कमाए? यह स्वतन्त्रता प्राप्त करने की होड़ में आपका बच्चा अन्य बहुत विषयों में परतन्त्र रह जाता है। खाना बनाना, घर साफ रखना, बर्तन धोना यह सब भी आत्मनिर्भरता के महत्त्वपूर्ण मानक है जिनकी आज उपेक्षा की जा रही है। इसीलिए आजकल लोग 'इंडिपेन्डेट नहीं, बाई-इंडिपेन्डेट' हो रहे हैं। लाखों-करोड़ों की सैलरी लेने वाले लोगों के घर में अगर कुक छुट्टी पर हो, तो चूल्हा तक नहीं जलता।

3.बच्चो को अपने निर्णय खुद लेने देना: तथाकथित स्वतंत्रता के नाम पर आजकल सबको यही घुट्टी पिलाई गयी है कि बच्चे को अपने निर्णय खुद लेने दो। मां-बाप उसमें दखल ना दें। अधिकतर स्कूलों में यही शिक्षा दी जाती है कि करियर, विवाह और अन्य विषयो में अपनी पसंद को तवज्जो दो, इसमें मां-बाप का दखल न हो। मां-बाप का सलाह देना दखल नहीं होता। 15-16 वर्ष का बच्चा जिसने घर के बहार की दुनिया नहीं देखी है, वह अपने करियर का निर्णय अपने आप कैसे ले सकता है? उसे मार्गदर्शन की आवश्यकता होती ही है। उसकी निर्णय प्रक्रिया में से मां-बाप को दूर करके आजकल उसके मित्र या इण्टरनेट घुस गया है। बच्चा इनके प्रभाव से ही निर्णय लेता है।

4.धर्म के स्वाध्याय का अभाव: आजकल घर में धर्म के नाम पर मन्दिर होगा जहां रोज दिया जलाया जायेगा। मां-बाप धार्मिक चैनल पर कथाकारों के व्याख्यान सुनकर खुश हो जायेंगे। ग्रन्थ के नाम पर भागवत् जैसे अश्लील ग्रन्थ पढ़कर पुण्य की आशा रखी जायेगी। दो पीढ़ी के बीच में धर्म का आदान-प्रदान नहीं रहा।

पहले बाप हाथ पकड़कर अपने पुत्र या पुत्री को यज्ञ में आहूति दिलवाता था। आज कुछ लोगों को यह पाखण्ड लगता है तो बच्चा तो और आगे बढेगा ना! इन सब धर्माभास से बहार निकलो। भागवत् जैसे ग्रन्थ के स्थान पर श्रीराम, श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे हमारे प्रतापी पूर्वजो की कथा सुनाएं।

टीवी पर जितने भी पौराणिक कार्यक्रम आते हैं उन पर प्रतिबन्ध लगाएं तभी नयी पीढ़ी को धर्म का वास्तविक ज्ञान होगा और वह धर्माभास से बच पायेगी अन्यथा टीवी पर श्रीकृष्ण को अन्य की विवाहिता के साथ नांचते देखकर आप का बच्चा भी वही सीखेगा और याद रखना-आज की पढ़ी-लिखी पीढ़ी के सामने छाया और माया जैसे गपोड़े काम नहीं आते। उन्हें बुद्धिगम्य समाधान देना ही होगा। अनार्ष ग्रन्थ को त्यागकर आर्ष ग्रन्थ की ओर लौटना होगा। सनातन धर्म को पतन से बचने के लिए हमे जागृत होना ही होगा।

कौन थी श्रद्धा और क्या है पूरा मामला?

मुंबई की एक मल्टिनेशनल कंपनी में काम करती थी 26 साल की श्रद्धा वाकर। वहीं उसकी मुलाकात हुई आफताब से। दोनों एक-दूसरे को पसंद करने लगे। शुरुआत में श्रद्धा ने अपने परिवार को इस रिलेशनशिप के बारे में नहीं बताया था लेकिन फिर एक दिन उसने बताया कि वह आफताब के साथ लिव-इन में रह रही है। परिवार ने काफी समझाया, लेकिन श्रद्धा नहीं मानी और कुछ वक्त बाद दोनों ने मुंबई छोड़ दी। दोनों महरौली के छतरपुर इलाके में रहने लगे थे। यहां श्रद्धा से लड़ाई होने के बाद आफताब ने उसकी हत्या कर दी और शव के 35 टुकड़े कर इधर-उधर फेंक दिए। उधर, जब बेटी का फोन आना बंद हो गया, तो परेशान पिता दिल्ली पहुंचे और इसके बाद मामले का खुलासा हुआ।

इसी गंभीर मामले पर बेटियों को चेतावनी भरे शब्दों में किसी ने क्या खूब लिखा है:-

बहकों मतना बेटियों, कुल को समझो खास,
पैंतीस टुकड़ों में कटा, श्रद्धा का विश्वास।
भरोसा मतना कीजिए, सब पर आंखें मींच,
स्वर्ण मृग के भेष में, आ सकता मारीच।
मां-बाप के हृदय से, गर निकलेगी आह,
कभी सफल होगा नहीं, ऐसा प्रेम-विवाह।
आधुनिकता के समर्थकों, इतना रखना याद,
बिन मर्यादा, आचरण के बिगड़ेगी औलाद।
जीवन स्वतंत्र आपका, करिये फैसला आप,
पर ऐसा कुछ न कीजिए, मुंह छिपाये मां-बाप।
घर आंगन की गौरैया, कुल की इज्जत आप,
सावधान रहना जरा, षड्यंत्रों को भांप।
बॉलीवुड़ की गंदगी, खत्म किये संस्कार,
जालसाज अच्छे लगें, बुरा लगे परिवार।
जब कभी तन पर चढें, अंधा इश्क खुमार,
इस दरिदंगी को याद तुम, कर लेना इकबार।
नारी तुम श्रद्धा रहो, न घर उपयोगी चीज,
फिर किस की औकात जो, काट रखें तुम्हें फ्रीज।
संस्कारों की सराहना, कुकृत्य धिक्कारो आज,
आने वाली पीढ़ियां, करेंगी तुम पर नाज।

आधुनिकता के नाम पर संस्कारों को भुलाने वाली युवा पीढ़ी की झूठे प्यार में बंद आंखें खोल देने वाली घटना है। दुनिया में केवल और केवल मां-बाप ही निस्वार्थ सच्चा प्रेम करते हैं। ऐसे मां-बाप के दिल को दु:खी कर जो लड़की अथवा लड़का ऐसा कृत्य करता है, वह कभी सुखी नहीं रह सकता और उनका हश्र बहुत बुरा होता है।

संकलन - **जसविन्द्र आर्य**
युवा भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

अपने शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए खाएं

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल कुरुक्षेत्र का श्रेष्ठ उत्पाद
स्पेशल च्यवनप्राश

घटक द्रव्य: बेल छाल, अरणी, अरलू, गम्भारी, पाटला, मुगदपर्णी, माषपर्णी, पीपल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, काकड़ासिंगी, भूई आंवला, मुनक्का, जीवन्ती, पोहकर मूल, अगर गिलोय, बड़ी हरड़, बला, ऋद्धि-वृद्धि, जीवक ऋषनक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा, मेदा महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, छोटी इलायची, कमल, सफेद चन्दन, विदारीकन्द, अडूसा, काकनासा, अश्वगन्धा, शतावरी, आंवला, नागकेसर, लौंग, केसर, दालचीनी, तेजपात, वंशलोचन, शहद व देशी घी।

मात्रा व अनुपान : 1-1 चम्मच प्रात: सायं दूध के साथ सेवन करें।

गुण व उपयोग : ऋषि च्यवन ने इसका सेवन किया था और बूढ़े से जवान हो गये थे, इसलिए इसका नाम च्यवनप्राश हुआ। यह अग्नि और बल का विचार कर क्षीण व्यक्ति को इसका सेवन करना चाहिए। बालक, वृद्ध, क्षत-क्षीण, हृदय रोगी और क्षीण स्वर वाले व्यक्ति को इसका सेवन करने से काफी लाभ होता है। इसके सेवन से खांसी, श्वास, प्यास, छाती का जकड़ना, वातरोग, पित्तरोग, शुक्रदोष और मूत्रदोष, नष्ट हो जाते हैं। यौनशक्ति बढ़ाने में सहायक, वृद्धि, स्मरण शक्तिवर्धक है। इससे कान्ति, वर्ण और प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा मनुष्य बुढ़ापा रहित हो जाता है। यह फेफड़ों को मजबूत कर हृदय को नई ताकत प्रदान करता है। पुरानी खांसी और दमा में बहुत लाभदायक है।

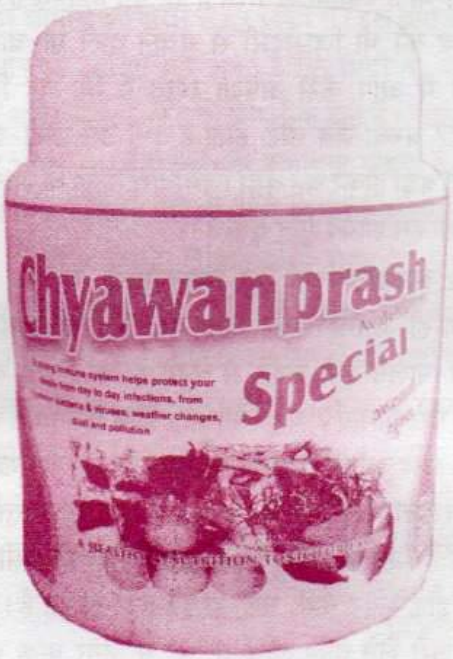

प्राकृतिक चिकित्सा से दमकाएं सौंदर्य

डॉ. देव आनन्द

शरीर व मन दोनों का सौंदर्य ही असली सौंदर्य होता है लेकिन आजकल हम लोग सौंदर्य से रंग, रूप, सुन्दर बाल आदि का ही अर्थ लेते हैं। आज के युग में गौर रंग व कांतिवान त्वचा सबको अच्छी लगती है लेकिन निस्तेज गौर रंग से तो अच्छी रहती है धाग-धब्बे रहित, स्वच्छ, कांतिवान सांवली त्वचा। आज हर कोई सुन्दरता को लेकर जागरूक है। महिलाएं केवल बाहरी लीपा-पोती में लगी रहती है जबकि उत्तम सौंदर्य के केवल दो ही सूत्र हैं :

1. सन्तुलित आहार **2. नियमित व्यायाम**

बाहरी लीपा-पोती वाली सुन्दरता ज्यादा दिनों तक नहीं रहती लेकिन उपरोक्त दो सूत्र यदि हम अपने जीवन में अपनाते हैं तो सुन्दरता असली और टिकाऊ होगी। सौंदर्यता का ख्याल रखने के लिए सर्वप्रथम हमें हमारी त्वचा किस प्रकार की है, ज्ञात होना चाहिए। साधारणतया त्वचा पांच प्रकार की होती है :-

1. साधारण त्वचा : जो ना ज्यादा ड्राई हो ना तैलीय किसी भी प्रकार की विवर्णता, फोड़े-फुंसी से रहित, स्वच्छ एक जैसी टोन वाली त्वचा, साधारण त्वचा कहलाती है।

2. शुष्क त्वचा : तुरन्त रूक्ष होने वाली, सूखी व काली पड़ने वाली। इस प्रकार की त्वचा Sebuin Secretion कम होता है। इस प्रकार की त्वचा वाले लोग जल्दी बूढ़े दिखने लगते हैं। सर्दियों में उनको अत्यधिक परेशानी रहती है। इस प्रकार की त्वचा वालों को ज्यादा ध्यान रखने की जरूरत होती है।

3. तैलीय त्वचा : इस प्रकार की त्वचा में Sebuin Secretion अधिक होने के कारण त्वचा तैलीय रहती है, त्वचा पर धूल, मिट्टी, प्रदूषण कण तुरन्त चिपकते हैं इसलिए पिंपल्स, कील-मुहांसे ज्यादा होते है। त्वचा ऐसी दिखती है जैसे त्वचा पर तेल लगाया हो। त्वचा को बार-बार साबुन से धोना पड़ता हैं।

4. मिश्रित त्वचा : यह त्वचा ऑयली और शुष्क का सम्मिश्रण होती है। इसमें सामान्यतया माथा, नाक, जबड़े पर ऑयली व आँखों के नीचे व गालों पर त्वचा ड्राई रहती है।

5. संवेदनशील त्वचा : यह त्वचा अत्यधिक नाजुक होती है। वातावरण में बदलाव, ज्यादा धूप, ब्लीचिंग, वैक्सिंग, थ्रेडिंग व परफ्यूम आदि यह त्वचा सहन नहीं कर पाती, तुरन्त रिएक्शन होती है। उपरोक्त कारणों से बचाव हेतु आभ्यन्तर आयुर्वेदिक उपचार से इसको कम किया जा सकता है अतः आपकी त्वचा किस प्रकार की है, उसी के अनुरूप ही हर्बल सौंदर्य क्रीम, फेसपैक आदि हमें उपयोग करना चाहिए।

अच्छी गुणवत्ता के फेस पैक कैसे बनाएं

साधारण त्वचा हेतु : साधारण त्वचा हेतु चन्दन, सारिवा, मुलेठी, हल्दी, नागरमोय, मुल्तानी मिट्टी आदि सभी को बराबर मात्रा में लेकर महीन चूर्ण बना कर गुलाब जल में पेस्ट तैयार कर लें। इसमें 2-4 बूंद नींबू रस डालकर चेहरे पर लगाएं।

शुष्क त्वचा : मुलेठी, अश्वगंधा, सारिवा, उशीर, चन्दन, आंबा हल्दी, मंजिष्ठा आदि का महीन चूर्ण बनाकर दूध में डालकर पेस्ट बना लें। पैक तैयार करते समय 4-5 बूंदे शहद डालकर लगाना चाहिए। उपरोक्त मिश्रण में अगर पपीता की गिरी डाल लें तो चेहरे की डेड सैल निकल जाती है और चेहरा सुंदर दिखता है। ग्लीसरीन, नींबू सन्तरे के रस व गुलाब जल को मिक्स करके चेहरे पर लगाने से भी रूक्षता कम होती है।

एक कप गर्म दूध में एक चम्मच गाय का घी, एक चम्मच मिश्री चूर्ण मिलाकर लेने से आन्तरिक खुश्की दूर होती है, त्वचा की रूक्षता कम होती है, चेहरा तेजयुक्त होता है।

यदि आप अपने खानपान का ख्याल रखें और समय-समय पर शरीर को तरोताजा रखने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा लें तो आपके चेहरे पर वास्तविक सुन्दरता की चमक स्पष्ट नजर आएगी।

-डॉ. देव आनन्द मुख्य चिकित्सा अधिकारी
स्वामी श्रद्धानन्द योग, आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

भोजन के लिए किस धातु के हों बर्तन

आजकल हमारा खानपान कुछ ऐसा हो गया है कि शुद्ध, सात्त्विक भोजन हमारी थाली से गायब हो गया है जिस कारण हम अनेक रोगों से ग्रसित हैं। अस्पतालों में रोगियों की भीड़ बढ़ती जा रही है। बीमारियों के नाम भी रोज नये-नये सुनने को मिलते हैं। इसमें बड़ा योगदान हमारी रसाई में बनने वाला भोजन और भोजन बनाने में प्रयुक्त होने वाले बर्तनों का भी है। पुराने समय में अधिकतर लोग पीतल या तांबे के बर्तनों में भोजन बनाते थे जो बिल्कुल शुद्ध और स्वादिष्ट होता था। कौन-सी धातु के बर्तन में भोजन करने से क्या क्या लाभ और हानि होती है, लेख में इस पर प्रकाश डालते हैं:-

1. सोना -सोना एक गर्म धातु है। सोने से बने पात्र में भोजन बनाने और करने से शरीर के आन्तरिक और बाहरी दोनों हिस्से कठोर, बलवान, ताकतवर और मजबूत बनते हैं, साथ-साथ सोना आँखों की रोशनी भी बढाता है।

2. चाँदी -चाँदी एक ठंडी धातु है जो शरीर को आंतरिक ठंडक पहुंचाती है। शरीर को शांत रखती है इसके पात्र में भोजन बनाने और करने से दिमाग तेज होता है, आँखों स्वस्थ रहती है, आँखों की रोशनी बढती है और इसके अलावा पित्तदोष, कफ और वायुदोष नियंत्रित रहता है।

3. कांसा -काँसे के बर्तन में खाना खाने से बुद्धि तेज होती है, रक्त में शुद्धता आती है, रक्तपित्त शांत रहता है और भूख बढ़ाती है लेकिन काँसे के बर्तन में खट्टी चीजें नहीं परोसनी चाहिए। खट्टी चीजें इस धातु से क्रिया करके विषैली हो जाती है जो नुकसान देती है। कांसे के बर्तन में खाना बनाने से केवल 3 प्रतिशत ही पोषक तत्त्व नष्ट होते हैं।

4. तांबा -तांबे के बर्तन में रखा पानी पीने से व्यक्ति रोग मुक्त बनता है, रक्त शुद्ध होता है, स्मरण-शक्ति अच्छी होती है, लीवर संबंधी समस्या दूर होती है, तांबे का पानी शरीर के विषैले तत्त्वों को खत्म कर देता है इसलिए इस पात्र में रखा पानी स्वास्थ्य के लिए उत्तम होता है। तांबे के बर्तन में दूध नहीं पीना चाहिए इससे शरीर को नुकसान होता है।

5. पीतल -पीतल के बर्तन में भोजन पकाने और करने से कृमि रोग, कफ और वायुदोष की बीमारी नहीं होती। पीतल के बर्तन में खाना बनाने से केवल 7 प्रतिशत पोषक तत्त्व नष्ट होते हैं।

6. लोहा -लोहे के बर्तन में बने भोजन खाने से शरीर की शक्ति बढती है, लोहतत्त्व शरीर में जरूरी पोषक तत्त्वों को बढ़ता है। लोहा कई रोगों को खत्म करता है, पांडू रोग मिटाता है, शरीर में सूजन और पीलापन नहीं आने देता, कामला रोग को खत्म करता है और पीलिया रोग को दूर रखता है लेकिन लोहे के बर्तन में खाना नहीं खाना चाहिए क्योंकि इसमें खाना खाने से बुद्धि कम होती है और दिमाग का नाश होता है। लोहे के पात्र में दूध पीना अच्छा होता है।

राजेश कुमार

7.स्टील -स्टील के बर्तन नुक्सानदायक नहीं होते क्योंकि ये ना ही गर्म से क्रिया करते हैं और ना ही अम्ल से, इसलिए नुक्सान नहीं होता है। इसमें खाना बनाने और खाने से शरीर को कोई फायदा नहीं पहुँचता तो नुक्सान भी नहीं पहुंचता।

8.एल्युमीनियम -एल्युमीनियम बोक्साईट का बना होता है। इसमें बने खाने से शरीर को सिर्फ नुक्सान होता है। यह आयरन और कैल्शियम को सोखता है इसलिए इससे बने पात्र का उपयोग नहीं करना चाहिए। इससे हड्डियां कमजोर होती है। मानसिक बीमारियाँ होती है, लीवर और नर्वस सिस्टम को क्षति पहुंचती है। उसके साथ साथ किडनी फेल होना, टी. बी., अस्थमा, दमा, वात रोग, शुगर जैसी गंभीर बीमारियां होती है। एल्युमीनियम के प्रेशर कूकर से खाना बनाने से 87 प्रतिशत पोषक तत्त्व खत्म हो जाते हैं।

9.मिट्टी -मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने से ऐसे पोषक तत्त्व मिलते हैं, जो हर बीमारी को शरीर से दूर रखते थे। इस बात को अब आधुनिक विज्ञान भी साबित कर चुका है कि मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने से शरीर के कई तरह के रोग ठीक होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, अगर भोजन को पौष्टिक और स्वादिष्ट बनाना है तो उसे धीरे-धीरे ही पकना चाहिए। भले ही मिट्टी के बर्तनों में खाना बनने में वक्त थोड़ा ज्यादा लगता है, लेकिन इससे सेहत को पूरा लाभ मिलता है। दूध और दूध से बने उत्पादों के लिए सबसे उपयुक्त है मिट्टी के बर्तन। मिट्टी के बर्तन में खाना बनाने से पूरे 100 प्रतिशत पोषक तत्त्व मिलते हैं और यदि मिट्टी के बर्तन में खाना खाया जाए तो उसका अलग से स्वाद भी आता है। अत: भविष्य में आप जब भी बर्तन खरीदें तो इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उस धातु के बर्तन लें जो आपके स्वाद के साथ-साथ आपकी सेहत के लिए भी लाभकारी हो।

संकलन : **राजेश कुमार**
मैनेजर, प्राकृतिक चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

देववाणी संस्कृत भाषा पर गर्व करें

शिवम् शास्त्री

वैदिक काल में संस्कृत भारतवर्ष की प्रमुख भाषा रही है। कालिदास, अभिनवगुप्त, शंकराचार्य जैसे अनेक नाम हैं जो संस्कृत भाषा के मूर्धन्य विद्वानों में से एक है। साहित्य के अलावा आयुर्वेद के क्षेत्र में, दर्शन के क्षेत्र में तथा विज्ञान आदि के क्षेत्र में भी अनेक विद्वान् भी इस भाषा में पाए जाते हैं। संस्कृत भाषा का साहित्य बहुत विस्तृत है। अपने नाम को चरितार्थ करता शब्द है वैदिक संस्कृत अर्थात् जिस काल में वेदों की रचना हुई।

हम सब जानते हैं कि वेद हमारे प्राचीनतम ग्रंथ हैं। वैदिक संस्कृत को 'वैदिकी, वैदिक, छंदस् या छांदस' आदि भी कहा जाता है। संस्कृत के विकास में यह भाषा वैदिक संस्कृत से आगे बढ़ती है। भाषा का वह रूप जो 'महर्षि पाणिनि' अपने व्याकरण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में निर्धारित करते हैं लौकिक संस्कृत के रूप में जानी जाती है। वैदिक संस्कृत में कुल 52 ध्वनियां थीं जो लौकिक में आकर मात्र 48 बचती हैं। लौकिक संस्कृत में ही हमारी संस्कृति के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ रामायण और महाभारत की रचना हुई। इस प्रकार से लौकिक संस्कृत वह भाग है जो भारतीय जनमानस के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण बना। समय के साथ बोलचाल में हिन्दी और उर्दू के प्रचलन के बावजूद संस्कृत भाषा का महत्त्व कम नहीं हुआ है। संस्कृत को आज भी विश्व की सबसे शुद्ध भाषा होने का गौरव प्राप्त है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वेद-वेदांगों सहित अनेक ग्रन्थों की रचना संस्कृत में ही की क्योंकि यही सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत को लेकर अनेक ऐसे तथ्य जिनके बारे में जानकर आपको भारतीय होने पर गर्व होगा। विस्तार से जानते हैं संस्कृत के बारे में:-

1. संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी माना जाता है और वर्तमान में यह उत्तराखण्ड की आधिकारिक भाषा भी है।

2. अरब लोगों की दखलअंदाजी से पहले संस्कृत भारत की राष्ट्रीय भाषा थी।

3. संस्कृत में दुनिया की किसी भी भाषा से ज्यादा शब्द हैं। वर्तमान में संस्कृत के शब्दकोष में 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्द हैं। संस्कृत किसी भी विषय के लिए एक अद्भुत खजाना है। जैसे हाथी के लिए ही संस्कृत में 100 से ज्यादा शब्द हैं।

4. किसी और भाषा के मुकाबले संस्कृत में सबसे कम शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है।

5. संस्कृत दुनिया की अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी मांसपेशियों का इस्तेमाल होता है।

6. कर्नाटक के मुत्तूर गांव के लोग केवल संस्कृत में ही बात करते हैं।

7. सुधर्मा संस्कृत का पहला अखबार था, जो 1970 में शुरू हुआ था। आज भी इसका ऑनलाइन संस्करण उपलब्ध है।

8. संस्कृत स्पीच थेरेपी में भी मददगार है, यह एकाग्रता को बढ़ाती है।

9. संस्कृत सीखने से दिमाग तेज होता है और याद करने की शक्ति बढ़ती है इसलिए लंदन और आयरलैण्ड के कई स्कूलों में संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया गया है।

10. इस समय दुनिया में 17 से ज्यादा देशों की कम से कम एक विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा के कोर्सेस में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

11. जर्मनी में बड़ी संख्या में संस्कृतभाषियों की मांग है। जर्मनी की 14 यूनिवर्सिटीज में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

12. आपको जानकर हैरानी होगी कि कम्प्यूटर द्वारा गणित के सवालों को हल करने वाली विधि यानि एलगोरिथमस संस्कृत में बने हैं ना कि अंग्रेजी में।

13. अमेरिकन हिन्दू यूनिवर्सिटी के अनुसार संस्कृत में बात करने वाला मनुष्य बी.पी., मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोगों से मुक्त रहता है। संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है जिससे व्यक्ति का शरीर सकारात्मक, आवेश के साथ क्रियाशील रहता है।

14. अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के पास संस्कृत के ताड़पत्रों पर लिखी 60 हजार पांडुलिपियां हैं जिन पर नासा रिसर्च कर रहा है।

15. नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वो अंतरिक्ष ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे। इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या रही। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा, जो बिल्कुल ठीक रहा क्योंकि संस्कृत में वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं। जैसे-अहं विद्यालयं गच्छामि, विद्यालयं गच्छामि अहं, गच्छामि अहं विद्यालयं, यहां तीनों के अर्थ में कोई अन्तर नहीं है।

16. नासा के वैज्ञानिकों द्वारा बनाये जा रहे 6जी और 7जी जेनरेशन सुपर कम्प्यूटर्स संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे, जो 2034 तक बनकर तैयार हो जाएंगे।

- शिवम् शास्त्री
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सभा की नई कार्यकारिणी में युवाओं को मिली अहम जिम्मेदारी

रोहतक- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक का त्रिवार्षिक निर्वाचन 30 नवम्बर को निर्विरोध रूप से सम्पन्न हुआ। लगभग 11 बजे कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया जिसमें हाईकोर्ट चंडीगढ़ द्वारा नियुक्त ओब्जर्वर श्री प्रांशु कम्बोज एडवोकेट व सुश्री सिवानी खरीदी एडवोकेट भी उपस्थित रहे। प्रशासक श्री नरेन्द्र विद्यालंकार जी द्वारा गठित चुनाव जांच उपसमिति के सदस्य श्री लोकमणि कौशिक तथा श्री सतीश सिंधवानी की उपस्थिति में सहायक चुनाव अधिकारी श्री चन्द्रभान सैनी एवं चुनाव अधिकारी श्री धर्मवीर सैनी द्वारा सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों को प्रमाण-पत्र वितरित किया गया जिनके नाम इस प्रकार हैं-प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य, उपप्रधान श्री देशबन्धु मदान, मन्त्री श्री उमेद शर्मा, उपमंत्री श्री अनुराग, कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या, पुस्तकाध्यक्ष श्री सतीश बंसल तथा 15 अन्तरंग सदस्य क्रमश सर्वश्री राममेहर, जितेन्द्र कादयान, बलवान आर्य, देवदत्त आर्य, नायबसिंह, विजयपालसिंह, रमेश आर्य, वीरेन्द्र आर्य, रघुवीरसिंह, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, जगदीशचन्द्र आर्य, शिवकुमार, आचार्य ऋषिपाल, जयदेव आर्य, जगदेवसिंह।

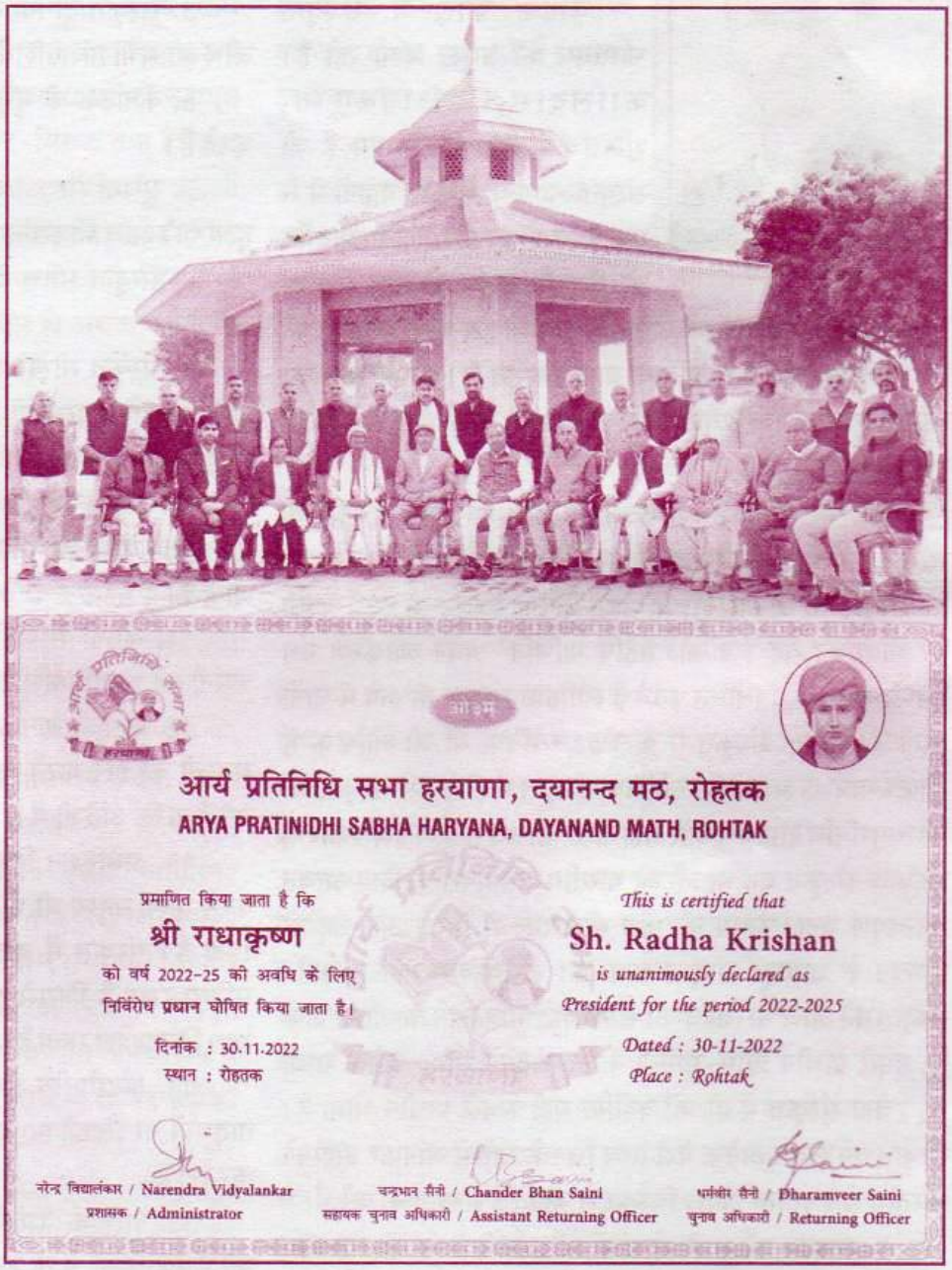

सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि आज समाज में नशे की आदत ज्यादा बढ़ चुकी है, छोटे-छोटे बच्चे तथा साथ बड़े भी नशे की गिरफ्त में आने लगे हैं। इसलिए आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जोर-शोर से होना चाहिए जिससे समाज में नई स्फूर्ति का संचार हो सके। नई कार्यकारिणी में युवा सदस्यों को जोड़ा गया है और हम नई कार्यकारिणी के साथ मिलकर आर्यसमाज का कार्य करेंगे। प्रधान जी ने घोषणा की कि आर्यसमाज के कार्य के लिए वे सभा से गाड़ी व उसका तेल इस्तेमाल नहीं करेंगे। सभा के कार्य के लिए वे अपनी ही गाड़ी तेल सहित इस्तेमाल करेंगे। यही परिपाटी उनकी वर्तमान में है और आगे भी इसे जारी रखेंगे। सभा के मन्त्री श्री उमेद शर्मा जी ने भी सभा को सम्बोधित किया व सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि हम सभी एकजुट होकर सभा के कार्य को आगे बढ़ायेंगे। हमारा मुख्य कार्य वेदों का प्रचार-प्रसार करना होगा। मंच का संचालन सत्यवान आर्य ने किया तथा शेरसिंह कार्यालयाधीक्षक ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों, सहायक चुनाव अधिकारी, चुनाव अधिकारी, प्रशासक महोदय एवं कार्यालय के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद किया कि जिन्होंने अपना कीमती समय एवं सहयोग देकर इस चुनाव कार्यक्रम को सफल बनाया है।

वैदिक संस्कृति और गो संवर्धन जीवन में उन्नति का मार्ग

प्रदीप दलाल

वैदिक संस्कृति हमारी पहचान, हमारा गौरव और हमें विश्व गुरु होने का सम्मान दिलाने वाली है। गुरुकुलीय शिक्षा, वेदों का पठन-पाठन, अनुशासन, गो-सेवा, गो-रक्षा एवं गो-संवर्धन, दैनिक हवन-यज्ञ और देश व समाज के प्रति हमारे नैतिक जिम्मेदारी ही हमारी संस्कृति की पहचान रही है। गाय प्रकृति का प्राण संस्कृति का आधार, आर्थिकता का मेरू-दंड और औषधि का भंडार है लेकिन बदलते समय के साथ जैसे-जैसे धन लोलुपता और सुख संपन्नता के साधन बढ़ते गए, उन साधनों के साथ हम अपनी मौलिक पहचान हमारी संस्कृति को अपने जीवन से तिलांजलि दे बैठे और उसका परिणाम हम वर्तमान में तो देख ही रहे हैं लेकिन भविष्य में इससे भी कहीं खतरनाक परिणाम हो सकते हैं।

एक-दूसरे से आगे निकलने की अंधाधुंध दौड़ में हम पाश्चात्य संस्कृति का अंगीकरण कर बैठे और उस महान् संस्कृति को धीरे-धीरे भुला दिया जिसने हमें कभी विश्वगुरु होने का दर्जा दिलाया था। बेशक हमने धन और संसाधन कितने ही अर्जित कर लिए हैं लेकिन वर्तमान युग में मानसिक शांति और मानसिक सुख नहीं अर्जित कर पाए क्योंकि स्वार्थ सिद्धि के युग में हम सबके कल्याण की भावना को भुला बैठे लेकिन वर्तमान में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं जिनके जीवन का लक्ष्य गोसेवा और गोसंवर्धन, दैनिक हवन और महर्षि दयानंद सरस्वती के महान् विचारों को आगे बढ़ाना ही लक्ष्य है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऐसे व्यक्तित्व लगातार समाज में पुरातन संस्कृति और गो-रक्षा को बढ़ावा देने के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं।

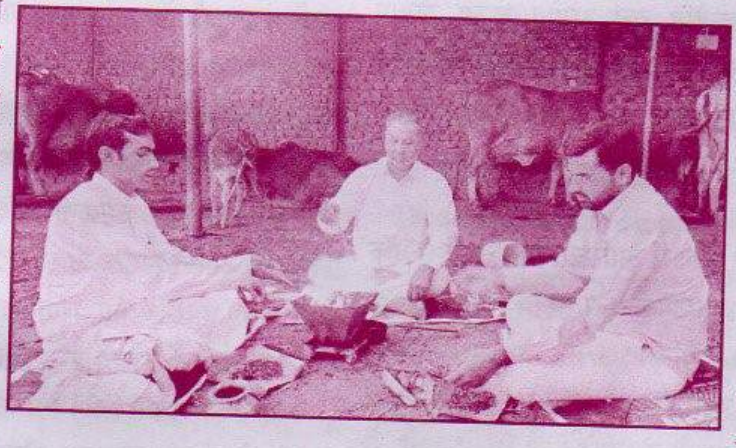

ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी राधाकृष्ण आर्य 40 वर्ष से अधिक वर्षों से आर्य समाज से जुड़े हैं और लगातार बिना किसी दिखावे के आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं। उनके दिन की शुरुआत दैनिक अग्निहोत्र-यज्ञ से होती है और प्रतिदिन जब तक वे अपने द्वारा स्थापित ऋषि दयानंद गोशाला में गायों की सेवा नहीं करते तब तक उनका दिन पूरा नहीं होता। गो-रक्षा एवं गो-संवर्धन और वैदिक शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के उनके दृढ़ निश्चय को देखकर प्रतीत होता है कि निश्चित रूप से अगर समाज में इस तरह के व्यक्तित्व युवा पीढ़ी का वैदिक संस्कृति और गो-रक्षा एवं गो-संवर्धन समेत आर्यसमाज के सिद्धांतों और महर्षि दयानंद के महान विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखेंगे तो निश्चित रूप से हम अपनी प्राचीन विरासत भारतीय पुरातन संस्कृति, दैनिक हवन, गुरुकुलीय परंपरा और वेदों के पठन-पाठन की ओर अवश्य लौटेंगे और निश्चित रूप से हमारा देश फिर से विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर होगा।

आर्यसमाज की भट्टी से तपकर निकले राधाकृष्ण आर्य का कहना है कि उन्हें आर्य समाज की सेवा करने का प्रण गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत की शिक्षाओं और विचारों से प्रभावित होकर लिया। स्वयं महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी भी कई अवसरों पर अपने जीवन में गो सेवा के महत्त्व के बारे में चर्चा कर चुके हैं। अनेक अवसरों पर उन्होंने कहा कि उन्होनें कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे एक राज्यपाल के रूप में देश की सेवा करेंगे, यह सौभाग्य केवल गोसेवा और आर्य समाज की शिक्षाओं के कारण ही प्राप्त हुआ है। वे भी अनेक मंचों से लोगों से देशी गाय को पालने और उसका संरक्षण करने का आह्वान करते हैं। राधाकृष्ण आर्य महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हैं और कहते हैं कि महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने उन्हें महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और भारतीय पुरातन संस्कृति एवं गो रक्षा की ओर बढ़ाने का आशीर्वाद देकर निश्चित रूप से उनका जीवन सफल करने का कार्य किया है।

राधाकृष्ण आर्य कहते हैं कि अब जीवन का एकमात्र लक्ष्य यही है कि हमारा देश फिर से वेदों और गुरुकुलीय शिक्षा की ओर लौट आए, फिर से घर-घर में गो रक्षा एवं गोपालन हो, फिर से हम शिक्षा के लिए विश्व भर में मशहूर विश्व-गुरु भारत की ओर लौट चलें और यह तभी संभव होगा जब सब मिलकर प्रण लेंगे क्योंकि यदि हमें समाज में बदलाव लाना है तो सबको प्रयास करना होगा।

- प्रदीप दलाल

पत्रकार एवं पूर्व छात्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

वैदिक काल की कुछ प्रसिद्ध विदुषियां

रवि शास्त्री

वैदिक संस्कृति से समृद्ध भारतवर्ष आज परी कथाओं-सा प्रतीत होता है। कितना विचित्र है कि हजारों साल पहले इतना विकसित और समृद्ध होते हुए भी आज देश की विश्वपटल पर पहले के समान सशक्त छवि नहीं है। कुछ मामलों में तो भारत उस समय से भी पीछे दिखाई देता है। ऐसा ही एक पहलू है -स्त्री शिक्षा।

सरकारी आंकड़े कुछ भी कहें मगर आज 65 फीसदी महिला शिक्षा दर रखने वाले इस देश में प्राचीन काल में शिक्षा और अन्य कई स्तरों पर लिंगभेद बिल्कुल नहीं था, जैसा कि वेदों से विदित होता है। जहाँ बाकी सभ्यताओं में स्त्री-पुरुष भेदभाव हमेशा से किया जाता रहा है, हमने इसे अपने आक्रांताओं से अनुगृहीत किया। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह और अनेक कुरीतियां वैदिक काल के बाद ही प्रचलित हुई।

प्राचीन भारत में शिक्षा, राजनीति, युद्ध, संगीत, कला, लेखन और हर अन्य क्षेत्र में महिलाओं की पूरी और बिना रोक-टोक पहुंच थी, इसीलिए 50 से अधिक विद्वान् महिलाओं के नाम हमारे इतिहास का हिस्सा हैं। इसके कुछ साक्ष्य विदुषियों के नामों और उनसे जुड़ी कथाओं के रूप में यहां प्रस्तुत है।

1. गार्गी -गार्गी जनक की सभा में उपस्थित विद्वानों में से एक थीं। उनको वेदों का अच्छा ज्ञान था। उनके और महर्षि याज्ञवल्क्य के बीच हुए शास्त्रार्थ (बृहदारण्यक उपनिषद् 3/6) के प्रसंग से सिद्ध होता है कि वह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। गार्गी के प्रश्न 'आसमान से ऊँचा और पृथ्वी से नीचे क्या है' ने सभा में उपस्थित सभी लोगों को सोच में डाल दिया था।

2. मैत्रेयी- मैत्रेयी को भारतीय विदुषियों का प्रतीक माना जाता है। वह एक वैदिक दार्शनिक थीं और उनको अद्वैत दर्शन में निपुणता प्राप्त थी। बृहदारण्यक उपनिषद् (2/4/24 और 2/4/5) में उनके और ऋषि याज्ञवल्क्य के बीच हुआ एक संवाद लिखित है, जिसमें वह आत्मन और ब्राह्मण के अंतर पर चर्चा करती है। माना जाता है कि मैत्रेयी ने तत्त्वमीमांसा जैसे विषयों पर गहन अध्ययन किया था। उस समय धर्म और शिक्षा, दोनों ही क्षेत्रों में मैत्रेयी को विशेष स्थान प्राप्त था।

3. लोपामुद्रा- लोपामुद्रा वैदिक काल की एक दार्शनिक और महर्षि अगस्त्य की पत्नी थीं। ऋग्वेद की 179वीं सूक्त उनके और उनके पति के बीच हुए एक संवाद को दर्शाता है। पंचदशी के मन्त्रों से ले कर यज्ञ सम्पन्न कराने तक लोपामुद्रा, पारिवारिक जीवन का महत्त्व समझाने से लेकर ललित सहस्त्रनाम के प्रचार-प्रसार और महाभारत में लोपामुद्रा का नाम आता है।

4. पॉलोमी 'शचि' इंद्राणी राजा पॉलोम की पुत्री और इंद्र की पत्नी, शचि इंद्र के दरबार में मौजूद 7 मन्त्रिकाओं में से एक थीं। बुद्धिमान और शक्ति से संपन्न होने के कारण शचि को विशेषाधिकार प्राप्त थे। कुछ ग्रंथों में इंद्र को शचिपति कहकर सम्बोधित किया जाना यह दर्शाता है कि वह उस समय एक महत्त्वपूर्ण शख्सियत थीं। ऋग्वेद (ऋचा, 10-159) में एक सूक्त में शचि ने अपनी शक्तियों का वर्णन किया है।

5.घोषा- मंत्रदिका, यानी मन्त्रों में निपुण, होने के साथ ही घोषा को अध्यात्म और दर्शन का भी अच्छा ज्ञान था। ऋग्वेद के दसवें मंडल के दो सूक्त (39 और 40), जिनमें कुल चौदह-चौदह पद्य हैं, घोषा द्वारा कहे गये हैं। घोषा को वैदिक विज्ञान, जैसे 'मधु-विद्या' का भी ज्ञान था। यह उसने अश्विनी पुत्रों से सीखी थी जो उस समय के त्वचा विशेषज्ञ थे।

6. अपाला- अपाला अत्रि मुनि की बेटी थीं। ऋग्वेद में लिखे हुए आठवें मंडल के साथ 7 सूक्त (8.91) उनके द्वारा इंद्र से कही गयी प्रार्थना और वार्तालाप की हैं। प्रचलित कथाओं के अनुसार, अपाला अपनी बुद्धिमत्ता के कारण पूरे राज्य में प्रसिद्ध थीं।

ऐसी ही अनेक विदुषियों के नाम प्राचीन भारत के इतिहास में दर्ज है जो अपनी बुद्धिमत्ता और युद्ध कौशल के दम पर बड़े-बड़े विद्वानों से न केवल साक्षात्कार करती थी बल्कि युद्ध भूमि में दुश्मनों के छक्के छुड़ाने से भी गुरेज नहीं करती थी।

एक वह समय था जब देश की राजकुमारी और ऋषि कन्याओं के बीच इस बात को लेकर प्रतिबद्धता होती थी कि कौन कितना विद्वान है अथवा किसका युद्ध कौशल अच्छा है और एक आज का भारत है जहां आधुनिकता के नाम पर सोशल मीडिया पर लड़कियों में कपड़े उतारने का कम्पीटिशन चल रहा है। आज वालीवुड की नायिकाएं लड़कियों की रोल मॉडल बन रही हैं। सोशल मीडिया पर दिनभर लड़कियों के गंदे डांस की वीडियो की भरमार होती है और युवा अपना कीमती समय नष्ट कर रहे हैं। मॉडर्न कही जाने वाली आधुनिक सोसायटी की अधिकांश महिलाओं को तो लेख में प्रस्तुत इन विदुषियों के नाम तक भी ज्ञात नहीं होंगे। वाह रे मेरे देश की आधुनिक नारी! - **रवि शास्त्री**

अध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सूर्य सिद्धान्त देने वाले महान् वैज्ञानिक वराह मिहिर

शुभम् शास्त्री

भारत विज्ञान की धरती है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि विज्ञान पर गहरे शोध किया करते थे और उनसे नई-नई खोज करते थे। ऐसे ही हमारे भारत के प्राचीन विद्वान् थे **'वराह मिहिर'**। मंगल पर पानी खोजने का प्रयास बहुत से विदेशी वैज्ञानिक और संस्थाएं कर रही हैं और उन्होंने इस पर मुहर भी लगा दी जब नासा के एक रोवर ने मंगल पर पानी को बर्फ के रूप में खोज निकाला। आपको जानकर हैरानी होगी कि नासा और यूरोपियन एजेंसी से भी कई हजार साल पहले भारत के एक सामान्य व्यक्ति ने मंगल पर पानी और गुरुत्वाकर्षण की खोज कर दी थी।

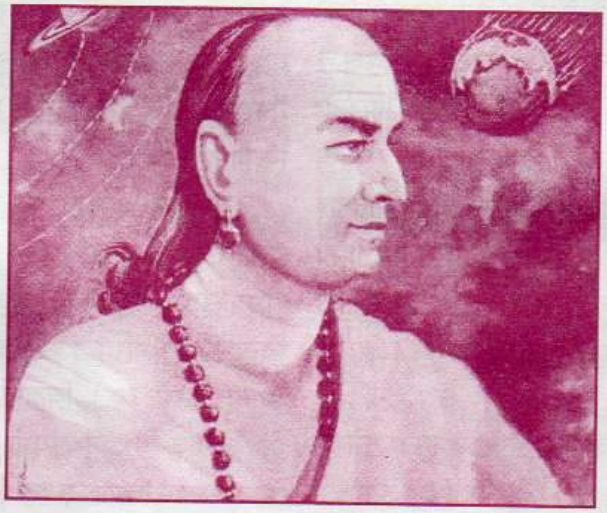

क्या आप जानते हैं ये दावा भारत में 1500 साल पहले एक ज्ञानी कर चुका है। ऐसा दावा करने वाले थे गणितज्ञ और खगोलज्ञ 'वराह मिहिर'। उन्होंने अपनी किताब 'सूर्य सिद्धांत' में अपने विज्ञान, नक्षत्र विद्या, अध्यात्म, गणित के ज्ञान का मिश्रण कर ऐसी-ऐसी चीजों का वर्णन 1500 साल पहले कर दिया था, जिन्हें आज बड़ी-बड़ी संस्थाएं गहन खोज के बाद जान पायी हैं। मंगल ग्रह पर पानी होने का दावा उनके द्वारा किये गए आविष्कार और खोज में से एक है।

'वराह मिहिर' उज्जैन के छोटे-से गांव 'कपिथा' में जन्में थे। उनके पिता 'अदित्यादास' सूर्यदेव के उपासक थे। बचपन से ही उन्हें विज्ञान और ज्योतिष विद्या में रुचि थी, इसका एक कारण ये था कि वे अपनी किशोरावस्था में ही आर्यभट्ट-1 से मिल कर उनसे बहुत ही ज्यादा प्रेरित हो गये थे।

आज के विज्ञान के अनुसार सौरमंडल के सभी ग्रहों की उत्पत्ति सूर्य से ही हुई है। 'वराह मिहिर' ने ये भी पहले ही लिख दिया था। विज्ञान के इतिहास में वे पहले ऐसे इंसान थे, जिन्होंने दावा किया था कि कोई फोर्स (शक्ति) है, जो इंसान को धरती पर टिकाये है। मसलन आज जिस ग्रेविटी की रचना का श्रेय हम न्यूटन को देते हैं वह काफी सालों पहले भारतीय ज्ञानी 'वराह मिहिर' की किताब में लिखी गयी थी। मंगल ग्रह के व्यास (डायमीटर) का भी करीब-करीब अनुमान वराह मिहिर की लेखनी में है।

'वराह मिहिर' की रचना 'सूर्य सिद्धांत' और उनकी लेखनी को देश-विदेश के वैज्ञानिकों ने आदर्श माना है। नासा के मंगल ग्रह अभियान में कार्यरत रहे अधिकारी 'अरुण उपाध्याय' ने भी 'वराह मिहिर' की खोज और नासा की खोज पर तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि 'वराह मिहिर' के 1500 साल पहले के दावे और आज के विज्ञान की फाइंडिंग में बहुत-सी समानताएं हैं। सोचिये कि जिस विज्ञान, एस्ट्रोनॉमी की खोज के लिए आज की सरकारें इतना पैसा लगाती हैं, उपकरण बनाती हैं, उनका सटीक विश्लेषण 'वराह मिहिर' ने बिना संसाधनों के कैसे किया होगा!

आपको जानकर हैरानी होगी कि वराह मिहिर द्वारा लिखित किताब 'सूर्य सिद्धांत' कहीं गुम हो गयी थी। ऐसा कहा जाता है कि इस ग्रंथ को चोरी कर लिया गया था। उसके बाद अनेक विद्वानों ने मिलकर 'सूर्य सिद्धांत' को पुनः लिपिबद्ध कर उनकी रिसर्च को आगे बढ़ाने का काम किया। अब यह पुस्तक पूरे विश्व में अनेक भाषाओं में उपलब्ध है।

विडम्बना यह है कि हम भरतवंशी आज पाश्चात्य विद्वानों और वैज्ञानिकों की प्रतिभा का गुणगान करते नहीं अघाते मगर अपने प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा किये गये अद्भुत आविष्कारों के विषय में हमें जानकारी ही नहीं है। या ये जानकारियां हमसे किसी षड़यन्त्र के तहत छिपाई गई है जिससे युवा पीढ़ी वैदिक संस्कृति में निहित अथाह ज्ञान के भण्डार से परिचित न हों और विदेशी विद्वानों का गुणगान करें। वायुयान का आविष्कार सबसे पहले भारत में हुआ था। 1895 में भारतीय वैज्ञानिक शिवकर बापूजी तलपडे ने मुंबई के चौपाटी के समुद्र तट पर विश्व का प्रथम विमान उड़ाया था जो 1500 फीट ऊपर तक उड़ा मगर हमारे बच्चों को पढ़ाया जाता है कि राइट बंधुओं ने विमान का आविष्कार किया, जो बिल्कुल गलत है। अतः अपनी वैदिक संस्कृति,भव्य विरासत और महान् वैज्ञानिकों के विषय में जानकारी हासिल करें और जहां तक संभव हो उसका प्रचार-प्रसार करें।

संकलनः-**शुभम् शास्त्री**
अध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

वैदिक संस्कृति की रक्षा में गुरुकुलों की भूमिका

मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द ने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में प्राचीन भारत में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का उल्लेख कर उसके व्यापक प्रचार का मानचित्र प्रस्तुत किया था। यह गुरुकुलीय पद्धति प्राचीन भारत में सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल व उसके बाद भी देश व विश्व की एकमात्र शिक्षा पद्धति रही है। इसी संस्कृति में हमारे समस्त ऋषि तथा वैदिक विद्वानों सहित हमारे राम, कृष्ण आदि महापुरुष, राजा-महाराजा व चक्रवर्ती राजा उत्पन्न हुए थे।

महाभारत युद्ध के बाद इस शिक्षा पद्धति के संचालन में व्यवधान उत्पन्न हुए और मुस्लिम व अंग्रेजों के राज्य व परतन्त्रता के दिनों में इस शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के अनेकानेक प्रत्यक्ष व गुप्त प्रयत्न हुए। यहां तक की शासक लोगों ने तक्षशिला, नालन्दा तथा चित्रकूट आदि के हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य के भण्डारों वा पुस्तकालयों को जलाकर नष्ट कर दिया। इसके पीछे आततायी मनोवृत्ति के लोगों द्वारा वैदिक धर्म व संस्कृति को नष्ट करना ही प्रतीत होता है। अन्य कोई उद्देश्य उनका दृष्टिगोचर व स्पष्ट नहीं होता। ऐसा होने पर भी वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कृत भाषा और वेद आज भी सुरक्षित हैं।

संस्कृत संसार की श्रेष्ठतम व प्राचीनतम भाषा स्वीकार की जा रही है। संसार में सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद स्वीकार किये गये हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सभी रहस्यों का पता देने वाले सर्वोपरि एकमात्र ग्रन्थ वेद ही हैं जो धर्म व साहित्य के ग्रन्थों में शीर्ष स्थान पर सुशोभित हैं। वेदों की इस महत्ता को स्थापित करने में वेदों व संस्कृत भाषा के पुनरुद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती का महत्त्वपूर्ण व अतुलनीय योगदान है। उन्होंने न केवल वेद और संस्कृत भाषा की रक्षा में योगदान ही किया अपितु वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा तथा उसके पुनरुद्धार में एक प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभाई है। सारा देश व विश्व ऋषि दयानन्द के इन कामों सहित सत्य धर्म का ज्ञान कराने, उसका प्रचार करने सहित धर्म-मत-सम्प्रदायों की अविद्या को दूर करने का पुरुषार्थ करने के लिये उनका ऋणी है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में संस्कृत भाषा की रक्षा एवं गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का उद्धार करने के लिये इसके तीसरे समुल्लास में विस्तार से प्रकाश डाला है और संस्कृत व वेदाध्ययन का पूरा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध संन्यासी ने सन् 1902 में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अन्तर्गत हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। प्राचीन वैदिक साहित्य के अध्ययन का यह विश्व का अपने समय का प्रमुख संस्थान बना था। इस गुरुकुल ने विगत 120 वर्षों में देश को अनेक वैदिक एवं संस्कृत भाषा के विद्वान् दिये हैं। इन विद्वानों में अनेक वेद भाष्यकार एवं संस्कृत शिक्षकों सहित पत्रकार एवं स्वतन्त्रता सेनानी सम्मिलित हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं ही देश की आजादी में योगदान करने वाले स्वतन्त्रता संग्राम के एक निर्भीक, साहसी, महान देशभक्त, अजेय योद्धा एवं सर्वप्रिय महान नेता थे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने उन्हें जीवित ईसा-मसीह की उपमा देकर सम्मानित किया था।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना व उसके सफल संचालन से प्रभावित होकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायियों ने समय-समय पर देश भर में अनेक गुरुकुलों की स्थापना व संचालन किया जिससे संस्कृत की रक्षा एवं संस्कृत का बोलचाल व लेखन में प्रयोग करने वाले विद्वानों की संख्या में वृद्धि हुई है। आज आर्यसमाज के अनुयायियों द्वारा देश में लगभग पांच सौ गुरुकुलों का संचालन किया जा रहा है जहां प्रतिवर्ष हजारों संस्कृत के विद्वान् तैयार होते हैं जिसका प्रभाव न केवल संस्कृत की रक्षा व उसके साहित्य के विस्तार व उन्नति में होता है अपितु ईश्वरीय-ज्ञान वेद पर आधारित सृष्टि के आदि मानव धर्म, उसकी रक्षा होती है। गुरुकुलों के अधिकांश विद्वान् वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार को अपने जीवन का मिशन बनाते हैं और वैदिक साहित्य की वृद्धि करते हैं जिससे देश व विश्व के लोग लाभान्वित होते हैं।

यह भी महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायी वेदों की शिक्षाओं को धर्म की श्रेष्ठ सर्वमान्य एवं सर्वग्राह्य शिक्षायें सिद्ध कर चुके हैं। वेद मनुष्यों को 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनने का सन्देश देते हैं। श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न मनुष्य जिस प्रक्रिया व पद्धति से बनता है उसी मानव निर्माण पद्धति को धर्म कहा जाता है। इस मानव निर्माण पद्धति में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार हमारे गुरुकुल संस्कृत और वेद का अध्ययन कराकर मनुष्यों को वेद की शिक्षाओं से परिचित करा रहे हैं और उन्हें सच्चा, श्रेष्ठ, धार्मिक, विद्वान मनुष्य बनाकर देश व समाज का कल्याण कर रहे हैं।

देश में संचालित गुरुकुलों ने संस्कृत और वैदिक साहित्य का अध्ययन कराकर वैदिक धर्म, संस्कृति तथा संस्कृत की रक्षा करने

का महान् कार्य किया है। संसार में सम्प्रति अनेकानेक मत-मतान्तर प्रचलित हैं जो अपनी विद्या-अविद्या युक्त बातों को मानते हैं। वे अपने मत की मान्यताओं को सत्य पर स्थिर करने का प्रयत्न नहीं करते। ऋषि दयानन्द ने सनातन वैदिक धर्म में आये अवैदिक व अन्धविश्वासों से युक्त विचारों को दूर करने के लिये अपना जीवन लगाया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसमें सत्यासत्य का निर्णय किया गया है और सामान्य लोगों का इस विषय में मार्गदर्शन किया गया है।

स्वामी जी ने वैदिक धर्म सहित सभी मत-मतान्तरों की प्रमुख मान्यताओं की युक्ति एवं तर्क के आधार पर समीक्षा की है और वैदिक मत से अविद्या को दूर करने सहित मत-मतान्तरों की अविद्या से भी देशवासियों सहित विश्व के लोगों को परिचित कराया है। उनका मिशन अभी पूरा नहीं हुआ है। ईश्वर की भी यही प्रेरणा व सदिच्छा है कि मनुष्य असत्य को त्याग कर सत्य का धारण करे। इसी लिये परमात्मा ने जीवात्माओं के कल्याण के लिये सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। वेदों का ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य साधारण से आसाधारण मनुष्य बन सकता है। उसकी अविद्या दूर होकर वह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। वेदों के ज्ञान व आचरण के बिना मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को नहीं जान सकता और न ही प्राप्त कर सकता है।

वेद मनुष्य को सभी दु:खों को दूर कर उसे मोक्षगामी बनाते हैं। भारतवासियों पर ऋषि दयानन्द व उनसे पूर्व के ऋषियों की यह महती कृपा रही है कि उन्हें उत्तराधिकार में वेद और वैदिक धर्म सहित श्रेष्ठ विचारों व मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति में सहायक कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। हमारे गुरुकुल हमारे देशवासियों को संस्कृत व वेदों का अध्ययन कराकर संस्कृत के विद्वान व वेद-धर्म प्रचारक उपलब्ध करा रहे हैं। यह हमारे गुरुकुलों का धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

वेद, धर्म, संस्कृति और संस्कृत भाषा की रक्षा में गुरुकुलों का सर्वोपरि योगदान है। हमें सभी वेदभाष्यकार एवं संस्कृत के बड़े बड़े विद्वान अपने गुरुकुलों से ही मिले हैं। यदि ऋषि दयानन्द ने गुरुकुलों की स्थापना की प्रेरणा न की होती तो आज हमें गुरुकुलों से मिले संस्कृत के विद्वान् न मिले होते जिनकी अनुपस्थिति में वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा न हो पाती।

संस्कृत भाषा सभी भाषाओं से प्राचीन, श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण है एवं संसार की सभी भाषाओं की जननी है। अमेरिका की संस्था नासा ने भी संस्कृत को श्रेष्ठ वैज्ञानिक भाषा स्वीकार किया है। संसार के अनेक देशों में संस्कृत का अध्ययन कराया जाता है। विदेशों के निष्पक्ष विद्वान् संस्कृत भाषा के शब्दों, वाक्य रचना और इसकी भाषागत विशेषताओं पर मुग्ध हैं। विदेशी मुख्यत: यूरोपवासी तो संस्कृत से आकृष्ट हो रहे हैं जबकि हमारी सरकारें व लोग संस्कृत की उपेक्षा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में हमारे गुरुकुलों का महत्त्व बढ़ जाता है। उन्हें संस्कृत के विद्वान् तैयार कर देश-विदेश में अध्यापन हेतु भेजने होंगे जिससे संस्कृत की रक्षा होकर वेद एवं धर्म व संस्कृति की भी रक्षा होगी। गुरुकुलों का मुख्य उद्देश्य ही संस्कृत का प्रचार व वेदाध्ययन कराकर वैदिक धर्म व संस्कृति का दिग्दिगन्त प्रचार व प्रसार करना है। यही आर्यसमाज का भी उद्देश्य एवं लक्ष्य है। इसी की प्रेरणा हमें वेद के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' शब्दों से मिलती है। ईश्वर करे कि हमारे सभी गुरुकुल वेद और संस्कृत भाषा के प्रचार का कार्य सुगमता से करते रहें। देश व विश्व के लोग सत्य की प्राप्ति के लिये ऋषियों द्वारा प्रदत्त वेद, वेदानुकूल शास्त्र प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों सहित आप्तवचनों का सहारा लें।

- मनमोहन आर्य
वैदिक विद्वान्, देहरादून

चक्षुष्यं छेदी तृट्श्लेष्मविषहिध्मरुपित्तनुत्।
मेहकुष्ठकृमिच्छर्दिश्वासकासातिसारजित्॥
व्रणशोधनसन्धानरोपणं वातलं मधु॥
रूक्षं कषायमधुरं, तत्तुल्या मधुशर्करा। (अ.हृ.51-52)

मधु आँखों के लिए हितकर, कफ का छेदन करने वाला, तृष्णा (प्यास), कफ विकार, विषविकार, हिचकी, रक्तपित्त, प्रमेह, कुष्ठ, कृमि, ऊल्टी, सांस, खाँसी, अतिसार में लाभकारी, घाव का शोधन, रोपण (भरने वाला), टूटी हड्डी को जोड़ने वाला, वातकारक, मधुर, कषाय एवं रूक्ष होता है।

Ingredients : Honey 100%
Not to be consumed by Diabetic Patients
Store in a cool, dark, dry & hygienic place. Do not refrigerate. Close the lid tightly after every use. Do not buy this pack if found tampered/seal is not intact.

ओ३म्
गुरुकुल कुरुक्षेत्र
प्राकृतिक कृषि फार्म पर
पालतू मधुमक्खियों का 100%
शुद्ध शहद
Mfd by: प्राकृतिक कृषि फार्म
गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरियाणा - 136 119
सम्पर्क सूत्र - 01744-238048, 238648, 8689901510, 9996026314
शहद का जमना उसका स्वाभाविक गुण है।

सीमित हो टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल

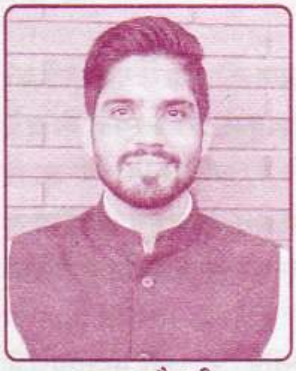

रमन चौधरी

कोरोना ने हमारी जिन्दगी को बदल कर रख दिया, यह कहना तार्किक होगा कि पूरी दुनिया में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला। लोगों ने एक-दूसरे से मिलना बंद कर दिया, खुद को कमरे में बंद कर लिया। यह समय की मांग भी थी, क्योंकि संक्रमण तेजी से बढ़ रहा था। कोरोना काल में नुकसान के साथ फायदा स्कूली बच्चों को भी मिला। फायदे में यह, उन्हें गर्मियों की छुट्टियों का इंतजार नहीं करना पड़ा। मार्च से ही उन्हें छुट्टियों जैसा माहौल मिल गया, नुकसान पढ़ाई का हुआ। उनके लिए कक्षाएं लेने का जरिया मोबाइल बन गया। रोजाना तीन-चार घंटे तक हर बच्चे ने मोबाइल पर वक्त बिताया।

लगातार दो साल तक यही हाल रहा। यह स्थिति बच्चों की आदत में ढल गई, जो संक्रमण कम होने के बाद भी नहीं छूटी। जिन बच्चों की आंखे अच्छी थीं, वे कमजोर हो गई। आंखों में तिरछापन आ गया। बच्चों ने मोबाइल चलाने के लिए अपने अभिभावकों से झूठ बोलना शुरु कर दिया, जबकि अब तो ऑनलाइन कक्षाएं पूरी तरह से बंद हो चुकी हैं बावजूद इसके बच्चे अपने अभिभावकों से मोबाइल चलाने के नाम पर यही कहते हैं कि वे स्कूल का काम कर रहे हैं।

अभिभावक वास्तविकता से परिचित हैं लेकिन चाहते हुए भी ज्यादा नहीं बोल पा रहे। कोरोनाकाल में कई बच्चों के फेसबुक और इंस्टाग्राम पर अकाउंट बने। इस बीच अभिभावकों ने भी ध्यान दिया। वास्तव में यह स्थिति खतरे को आमंत्रित करती है क्योंकि ऑनलाइन ठगी करने वाले ठग भी तेजी से सक्रिय हो गये हैं। पिछले दिनों नई दुनिया अखबार के अंक में 'स्क्रीन टाइम का अनुशासन' शीर्षक से एक कहानी प्रकाशित हुई जो मोबाइल के नुकसान से परिचित कराती है। यह कहानी एक परिवार के गोवा घूमने की तैयारी की ओर ही इशारा नहीं करती बल्कि घर की छोटी बच्ची की मानसिक स्थिति को बयां करती है। उसने रात भर इंटरनेट पर गोवा डेस्टिनेशन के बारे में तो जाना ही, साथ्ज्ञ ही नींद न आने पर इंटरनेट मीडिया पर उपलब्ध प्लेटफॉर्म का भ्रमण किया। अपने दोस्तों से चैट की।

आज हर परिवार और अभिभावक का बच्चों की ऐसी गतिविधियों पर ध्यान देना अनिवार्य हो गया है। आखिर मोबाइल बच्चे के लिए क्यों जरूरी है? इस सवाल का जवाब भी अभिभावकों को खुद ही देना होगा। अगर बच्चे अभिभावकों का मोबाइल चलाते हैं तो क्यों ? बच्चे अगर अभिभावकों से किसी वस्तु की जिद करते है तो समझाना चाहिए।

कई बच्चे बड़े होकर केवल अभिभावकों के ठीक से ध्यान न देने की वजह से बिगड़ते हैं। बच्चे स्कूल में दिन में कुछ ही घंटे बिताते हैं। शिक्षक बच्चों के सर्वांगीण विकास की तरफ ध्यान देते हैं लेकिन इसे आगे बढ़ाने का कार्य अभिभावकों को करना होगा। मोबाइल की लत बच्चों के लिए नुकसानदायक है। मोबाइल की स्क्रीन पर उपलब्ध कई प्लेटफार्म बच्चों को अच्छाई के साथ बुराई की तरफ भी ले जा सकते हैं।

बच्चों द्वारा मोबाइल के इस्तेमाल को लेकर सूरत के हीरा कारोबारी सावजी भाई ढोलकिया का वक्तव्य भी 'दैनिक भास्कर' में प्रकाशित हुआ। जिसमें उन्होंने कहा कि देश में परिवर्तन लाना जरूरी है। बच्चे मोबाइल फोन से न जानने वाली बातें सीख रहे हैं। इससे जुड़े अनेक मामले रोजाना अखबारों की सुर्खियां बन रहे हैं जिसके लिए सीधे तौर पर बच्चों के मां-बाप जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि यदि आप चाहते हैं कि 20 साल बाद आपके घर में पागल न पैदा हो तो अभी से मोबाइल के इस्तेमाल पर नियंत्रण करो। मोबाइल की वजह से बच्चे मां से आलस्य और बाप से गालियां सीख रहे हैं। उन्हें झूठ बोलना सिखाया जा रहा है। इसमें किसी दूसरे की गलती निकालने की जरूरत नहीं बल्कि सारा दारोमदार आपके घर के माहौल पर निर्भर है, जिसके लिए आप स्वयं जिम्मेदार हैं।

डायमंड किंग ढोलकिया ने कहा कि यह एक गंभीर विषय है और मैं जो कह रहा है, बहुत सोच-समझकर कह रहा हूं। सभी लोग मेरी बातों को स्वीकार करें, या मानें यह जरूरी भी नहीं है। इसके बावजूद मैं कहना चाहता हूं कि हम सभी परिवार के साथ रहते हैं, बच्चों के साथ खेलते हैं। मेरी बातें याद रखना, 20 साल बाद हर घर में एक व्यक्ति पागल होगा। आज हर व्यक्ति डिप्रेशन में जी रहा है, मोबाइल फोन व्यक्ति को पागल बना रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी कंपनी में हर जाति और हर कैटेगरी के आदमी काम करते हैं। उनके साथ रहते हुए मुझे यह अनुभव हुआ है। आज बच्चों की नहीं बल्कि अभिभावकों को बहुत कुछ सिखाने की जरूरत है। दुनिया बदल रही है, लोगों की आदतें और विचार बदल रहे हैं। समय के साथ हमें भी बदलने की जरूरत है। जो नहीं बदलेंगे वे बहुत पीछे रह जाएंगे। टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करना चाहिए मगर एक निर्धारित सीमा के ऊपर यदि हम किसी चीज का इस्तेमाल करते हैं तो निश्चित रूप से वह नुकसानदायक होता है।

- रमन चौधरी
कम्प्यूटर शिक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

देशी घी नहीं बटर ऑयल खा रहे हैं आप

पवन आर्य

खाद्य पदार्थों में मिलावट से जूझते भारतीय बाजार में बटर ऑयल से बना घी बड़ी चुनौती बन गया है। यह मल्टीनेशनल और राष्ट्रीय कंपनियों का संगठित षडयंत्र है जिसमें ग्राहक पैसे देकर भी अमानक घी खाने को मजबूर है। सही मायने में बाजार में देशी घी के नाम पर मोटी कीमत पर 'बटर ऑयल' बेचा जा रहा है। बटर ऑयल न तो मक्खन है और न ही घी। बटर ऑयल मुख्य रूप से जल और बिना विटामिन्स व दुग्ध तत्त्वों का एक तैलीय पदार्थ है जिसमें सिर्फ वसा (फैट) होता है।

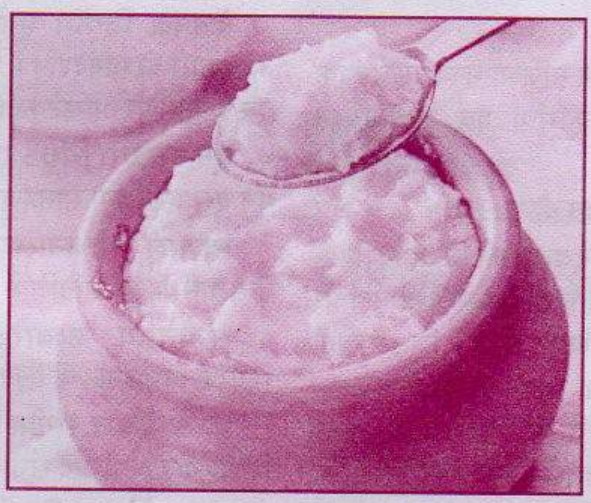

रिसर्च एंड मार्केट, 2022 की रिपोर्ट की मुताबिक, देश में 90 फीसदी से अधिक ब्रांडेड कंपनियां इसी बटर ऑयल को इंडोनेशिया, अमेरिका, सिंगापुर, जर्मनी, फ्रांस समेत 15 देशों से 150 से 200 रुपये प्रति किलो मंगाती है। इसके बाद बटर ऑयल में विटामिन्स, खुशबू, प्रिंजरवेटिव्स और अन्य दुग्ध तत्त्व मिलाकर 500 से 700 रुपये किलो गाय का घी या देशी घी कहकर बेच रही है। यही कारण है कि भारत में तमाम घी ब्रांड टेस्टिंग में बार-बार फेल हो रहे हैं। सरकारें दिखावा कार्यवाही या जुर्माना लगाकर चुप बैठ जाती है और कंपनियां बेधड़क होकर अपने उत्पाद को बेच रही है तथा मोटा मुनाफा कमा रही है।

कैसे बनाया जाता है बटर ऑयल

जब मशीन से कच्चे दूध से क्रीम निकालकर उसे हल्का गर्म करके अलग किया जाता है, तो उसे बटर ऑयल कहते हैं। यह शुद्ध दुग्ध वसा (मिल्क फैट) होता है। इसमें कोई रंग नहीं होता, रासायनिक रूप से यह घी है, मगर इसमें घी जैसा कुछ भी नहीं होता जबकि शुद्ध घी 100 डिग्री पर ही गर्म करके बनाया जाता है।

लुभावने विज्ञापन से ब्रेनवॉश

अनेक कंपनियां विज्ञापनों और ब्राडिंग कर दावा करती है कि उनका घी ज्यादा पाचनशील और प्राकृतिक है। शादी समारोहों, होटलों, रेस्टोरेंट और ढाबों पर 99 फीसदी बटर ऑयल से बना यह 'देशी घी' इस्तेमाल होता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कई प्रकार के प्रतिबंधित रसायन डालकर इस घी को स्वादिष्ट और खुशबूदार बनाया जाता है।

टेस्टिंग में 90 फीसदी देशी घी के ब्रांड फेल

देश में करीब छोटे-बड़े 300 घी ब्रांड हैं जिनमें हर साल 100 से अधिक ब्रांडों की टेस्टिंग होती है। इनमें 90 फीसदी से अधिक ब्रांड्स का घी अमानक पाया जाता है। जांच में आधे से ज्यादा ब्रांड तो ऐसे पाये गये जिनके कथित देशी घी में 10 फीसदी भी असली घी नहीं पाया गया।

आलम यह है कि हमारे देश में 11 प्रतिशत सालाना दर से मानक और अमानक घी का कारोबार बढ़ रहा है जिसमें 99 प्रतिशत से अधिक बटर ऑयल अकेले इंडोनेशिया से आयात होता है। आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2021 में देशी घी का कारोबार जहां 2624 अरब का हुआ वहीं 2024 तक इसके 4653 अरब होने की संभावना है। अरबों के इस खेल में कंपनियां मालामाल हो रही है और बेचारे ग्राहक ठगे जा रहे हैं।

भारी इम्पॉर्ट ड्यूटी वसूल रहे देश

विदेश से आयात किये जाने वाले बटर ऑयल पर भारत सहित दुनियाभर के देशों की सरकारें भारी आयात शुल्क लगाकर पैसे कमाती है। विदेशों से बटर ऑयल कई फ्लेवर और कोड में मंगाया जाता है। उदाहरण के लिए एचएस कोड 33021090 और 33021010 के बटर ऑयल पर सरकारें 125 फीसदी इम्पोर्ट ड्यूटी वसूलती है जबकि एचएस कोड 21069060 पर सरकार 200 फीसदी तक आयात शुल्क लेती है। इसके बावजूद बटर ऑयल का आयात बढ़ रहा है क्योंकि कंपनियां इससे बने देशी घी नामक उत्पाद को 500 से 700 रुपये प्रति किलो के भाव से बेचती है।

इस बारे में लोगों में जागरूकता आना जरूरी है। बाजार में मिलावट के खेल ने लोगों का स्वास्थ्य बिगाड़कर रख दिया है। दूध-घी से लेकर तेल, मसाला, दाल, चावल आदि भी मिलावट के मकड़जाल से अछूते नहीं हैं। सरकार के साथ-साथ आम लोगों को भी इस बारे में चिंतन कर उचित कदम उठाने चाहिए।

संकलन:- **पवन आर्य**
धर्म शिक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

साभार : राजस्थान पत्रिका

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2015** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही यहां **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला भव्य प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

प्राकृतिक कृषि फार्म एवं अनुसंधान केन्द्र : गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी** के मार्गदर्शन में 180 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक कृषि की जाती है। साथ ही यहां पर प्राकृतिक खेती को लेकर नये प्रयोग भी किये जा रहे हैं जिससे खेती को किसानों के लिए फायदेमंद बनाया जाए। साथ ही गुरुकुल परिसर में किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण हेतु भव्य प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया गया जिसमें किसानों को नि:शुल्क प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

घुड़सवारी: इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

निशानेबाजी प्रशिक्षण : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे: गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी **'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस'** कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग बनाया गया। वेद प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूमकर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करते हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र'** खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के सभी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला** भी है। **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्रिका से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और संस्कार को समर्पित गुरुकुल कुरुक्षेत्र की गतिविधियाँ

गुजरात से पधारे प्राकृतिक खेती के प्रचारकों के साथ आर्य प्र.सभा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य, गुरुकुल के प्रधान राजकुमार आर्य व रामनिवास आर्य

प्राकृतिक खेती पर पाठ्यक्रम तैयार करने वाली नीति आयोग व विश्विद्यालयों की टीम के साथ गुरुकुल के प्राचार्य सुबेप्रताप और व्यवस्थापक रामनिवास आर्य

प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में गुरुकुल की हैण्डबाल टीम के खिलाड़ियों को रवाना करते हुए निदेशक कर्नल अरुण दत्ता व मुख्य संरक्षक संजीव आर्य

प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में गुरुकुल की बॉस्केटबाल टीम के खलाड़ियों को रवाना करते हुए निदेशक कर्नल अरुण दत्ता व मुख्य संरक्षक संजीव आर्य

अंतर सदन काव्य पाठ एवं भाषण प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग के विजेताओं को आशीर्वाद देते हुए गुरुकुल के वरिष्ठ अध्यापकगण

अंतर सदन काव्य पाठ एवं भाषण प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग के विजेताओं को आशीर्वाद देते हुए गुरुकुल के वरिष्ठ अध्यापकगण

एनडीए इंटर स्क्वाड्रन बास्केटबॉल मैच में विजेता रहे 'ब्रेवो स्क्वाड्रन' को ट्राफी प्रदान करते हुए निदेशक कर्नल अरुण दत्ता व अन्य अधिकारीगण

प्रान्त स्तरीय 'भारत को जानो' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहे छात्रों के साथ निदेशक कर्नल अरुण दत्ता, प्राचार्य सूगे प्रताप व अध्यापक सुशील कुमार

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में राधाकृष्ण आर्य जी का हुआ भव्य स्वागत

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Reg. No. HR/ KKR/ 181/ 2021-2023

स्वामी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री राजकुमार गर्ग द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड निकट डी. एन. कॉलेज कुरुक्षेत्र से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक : राजकुमार गर्ग

मूल्य : 150 रुपये (वार्षिक)

प्रतिष्ठा में